ॐ

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

परिचय, कार्य और व्यवहार

केन्द्रीय कार्यालय

शैक्षिक महासंघ सदन

६०६/१३, कृष्णा गली नं. ९ मौजपुर,

दिल्ली-११००५३, दूरभाष: ०११-५५३८४६०२

द्वितीय संस्करण

रक्षाबन्धन, विक्रमाब्द-२०६३

सहयोग राशि-**१०/- रूपये**

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठाङ्क
१.	आवाह्न	३
२.	महासंघ परिचय	६
३.	संगठन विस्तार	१३
४.	वार्षिक कार्यक्रम	१५
५.	२००६ का लक्ष्य	२०
६.	अधिवेशन	२२
७.	अपने नेतृत्व में...	२४
८.	महासंघ और जागतिक संगठन	२७
९.	शक्ति प्रदर्शन	३१
१०.	प्रकाशन	३३
११.	विद्वत परिषद	३५
१२.	प्रकल्प, केन्द्र-राज्य के	३७
१३.	सेवा एवं सामाजिक सरोकार के कार्य	३९
१४.	सक्रिय सदस्यता	४४
१५.	आर्थिक सुदृढ़ता	४५

आवाहन

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के वैचारिक अधिष्ठान की प्रेरणा मूलत: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। **'राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक और शिक्षक के हित में समाज'** यह अपनी त्रिसूत्री सोच है। इसमें जो राष्ट्र का जिक्र है, वह 'सांस्कृतिक राष्ट्र' संकल्पना के आधारभूत है। राष्ट्र की सांस्कृतिक अधिष्ठान की संकल्पना, भारतीय जीवनदर्शन के शाश्वत सिद्धान्तों से आविष्कारित होना आवश्यक है। यह संकल्पना सुस्पष्ट होने पर ही राष्ट्र के हित में शिक्षा, यह सूत्र सिद्ध करना संभव होगा। एक बार शिक्षा का लक्ष्य स्पष्ट होने पर अन्य सभी बातें उसी के परिपेक्ष्य में तय करना आसान है।

शैक्षिक महासंघ एक व्यावसायिक संगठन है। व्यावसायिक संगठन की सोच पाश्चात्य जगत से आयी और हम तक पहुंची यह संकल्पना, भारतीय चिंतन से अलग है। किसी राजनैतिक दल के एक अंग के रूप में, राजकीय दलों के व्यावसायिक संगठन, आज अपने देश में विकसित हुए हैं। जैसे कांग्रेस, समाजवादी और साम्यवादी आदि राजनैतिक दलों के व्यावसायिक संगठन आज अपने देश में विकसित हुए हैं। इन व्यावसायिक संगठनों के व्यवहार के निर्णय, वे जिन राजनैतिक दलों के अंग होते हैं, उन राजनैतिक दलों की नीति के अनुकूल रखने होते हैं। ये और इन जैसी अन्य बातें यह स्पष्ट करती हैं कि ये व्यावसायिक संगठन स्वतंत्रता से राष्ट्र हित का विचार करने की स्थिति में नहीं रहते। उनका राष्ट्रहित का विचार और व्यवहार उनसे संबंधित राजनैतिक दल की नीति और राजनैतिक उद्देश्यों की परिधि में ही उनको रखना पड़ता है।

अत: हमारी व्यावसायिक संगठन की संकल्पना किसी राजनैतिक दल अथवा किसी राजसत्ता से बंधी हुई नहीं रहती। वह प्रत्यक्ष समाज द्वारा ही नियंत्रित होती है। समाज के अधिष्ठान व लक्ष्य के मूल में स्थित संस्कृति ही इस व्यावसायिक संगठन की प्रेरणा स्रोत व नियामक शक्ति है। अत: राजनैतिक दल का अंकुश हमारे

व्यावसायिक संगठन पर नहीं रहेगा। इसके विपरीत व्यावसायिक संगठन पर्याप्त मजबूत हो तो वह राजनैतिक दल के लिए अंकुश बन सकता है।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की स्थापना करते समय हमने इसी संकल्पना को स्वीकार कर कदम उठाया है। मुख्यत: तीन बातों को सामने रखा। **प्रथम बात** यह है कि हमारा यह संगठन किसी राजनैतिक दल का अंग अथवा मातहत नहीं बनेगा। **दूसरी बात** हमारा संगठन शिक्षकों की समस्याओं के साथ-साथ शिक्षा की समस्याओं को भी अपना कार्यक्षेत्र मानकर काम करेगा। कम्यूनिस्टों ने शिक्षक संगठन, शिक्षा के क्षेत्रों में कार्य करें, इसका विरोध किया है। उनके विचार में यह मात्र शासन का काम है। शिक्षा का विचार हम राष्ट्रहित व भारतीय सांस्कृतिक चिंतन की परिधि में करेंगे। **तीसरी बात** है, समाज के साथ हमारे रिश्तों की। **''चाहे जो मजबूरी हो, हमारी मांगें पूरी हो'' इस नारे ने शिक्षक को स्वार्थ केन्द्रित बनाया है** और समाज से उसका नाता इसके कारण टूटा है। मैं समाज का अंग हूँ, मेरा अस्तित्व ही समाज के कारण है, समाज के अभ्युदय में मेरा अभ्युदय है। समाज ध्वस्त हो और मैं बचूंगा, यह नहीं हो सकता, न होना चाहिए। शिक्षक समाज के नाते हमारा वृहत् समाजोपयोगी होना आवश्यक है। ये तीन बातें मूल सूत्र मानकर हमारा नीति निर्धारण, कार्यक्रम आयोजन होना आवश्यक है। आचार के बिना उच्चार किस काम का? सही अर्थ में भारतीय चिंतन के अनुरूप शिक्षक संघ खड़ा करना, यह एक महान् दायित्व हमने स्वीकार किया है। ऐसे संगठन को साकार करना सहज नहीं है। योजना पूर्वक परिश्रम करने से ही यह संभव होगा। सारांश में **समाज ऐसे महासंघ के निर्माण को कुतूहल, अपेक्षा और आशा से देख रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक ऐतिहासिक प्रयास है। यह प्रयास हमारे द्वारा ही सफल होने वाला है।**

इसके साथ एक और महत्वपूर्ण बात है। आज देश में हम एक चौराहे पर आ पहुँचे हैं। देश में आज जो सत्ता संघर्ष चल रहा है, वह दो प्रमुख विचारधाराओं के संघर्ष के प्रतीक के रूप में चल रहा है। चाहे जो कोई सत्ता संघर्ष में सफल हो, वह इस देश का ही है, अपने समाज का ही है उसमें हमें कोई फर्क नहीं पड़ना

चाहिए। लेकिन आज भाजपा और गैर भाजपा दोनों दल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और प्रादेशिक राष्ट्रवाद के प्रतिनिधि बने हुए हैं। हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पक्षधर हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पराभव इस देश के राष्ट्रीयत्व को ही बदल देगा। अतीत से अपने को अलग करेगा। भारत की वास्तविक और बहुवाण्छित पहिचान नष्ट करेगा, जो हमारे लिए सहनीय नहीं होगा। संघर्ष चरम सीमा पर पहुंचा हुआ है। संघर्ष निर्णायक है। मेरे मन में सवाल उठता है और आपके भी मन में यह सवाल उठता होगा कि इस वैचारिक, निर्णायक संघर्ष में हम क्या कर रहे हैं? इसमें हमारा योगदान क्या है? हमारा इसमें क्या योगदान हो सकता है?

एक वैशिष्ट्यपूर्ण संगठन का निर्माण व निर्णायक राष्ट्रीय संघर्ष में हमारा योगदान, ये हमारे लिए सर्वोपरि विषय हैं। बहुत काम सामने हैं। उनमें से अच्छे और उपयोगी काम भी बहुत होंगे, लेकिन उपरोक्त दो विषय अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। हमें सोचना आवश्यक है, क्या हम इन दो विषयों के महत्व के अनुरूप सक्रिय हैं? क्या इनका अग्र-क्रम हम ने सचमुच स्वीकार किया है? क्या हमारा व्यवहार इनके अनुरूप है? यदि नहीं है तो राष्ट्र की कठिन स्थिति में हमारा क्या उपयोग है? राष्ट्रीय हित में जो जीवन नहीं है वह मरण ही है। यदि सद्य स्थिति में अपना शिक्षक संगठन इस दृष्टि से क्रियान्वित नहीं है, यदि वह अपनी पूरी ताकत लगाकर प्रस्तुत निर्णायक संघर्ष में नहीं लड़ रहा है, तो यह सब मेहनत व्यर्थ है।

मेरा आप से आवाह्न है कि खुले मन से इस पर विचार करिए। इस समय, अन्य सब बातें गौण हैं। अगले दो-तीन वर्षों का अपना कार्यक्रम तय करते समय इसको ध्यान में रखिए और जुट जाइए।

वर्ष प्रतिपदा
वि.सं.२०६३

मुकुन्द कुलकर्णी
राष्ट्रीय संगठन मंत्री
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

''अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ'' कहाँ से..... कहाँ तक.... आगे कहाँ

अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की स्थापना प्रत्यक्षत: १९८८ में हुई। वैसे इसकी चर्चा, उस पर विचार आदि उसके पूर्व तीन-साढ़े तीन वर्ष से चल रहे थे। देश में अगणित शिक्षक संगठन अपने-अपने तरीके से सक्रिय थे। उनके रहते हुए एक नया संगठन प्रारंभ करने का निर्णय करना आसान नहीं था। अपने कार्यकर्ता इस नतीजे पर क्यों पहुँचे, यह एक बार स्पष्ट करना उपयुक्त रहेगा।

१९६१ के दिसम्बर में कटक के बाराबाती स्टेडियम में अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षक महासंघ का पहला वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उसमें अपने तीन कार्यकर्ता जिनका आपस में परिचय नहीं हुआ था, अपने अलावा और कोई स्वयंसेवक यहाँ पहुँचे हैं क्या, इसकी खोज में लगे हुए थे। इनमें से मुझे छोड़कर अन्य दो कार्यकर्ता शिक्षक संगठन में अपने-अपने प्रांत में मुझसे जेष्ठ कार्यकर्ता थे उनमें से एक मध्यप्रदेश से डॉ. वा.मो.उपाख्य श्री मामा आठ्यले और उत्तर प्रदेश से श्री श्रीकृष्ण जायस्वाल थे। प्रतिवर्ष वार्षिक अधिवेशन में, जिनका प्रेरणा स्त्रोत रा.स्व.संघ का वैचारिक अधिष्ठान था, ऐसे बन्धु अधिवेशन में इकठ्ठे आने लगे। १९६४ में जब सात-आठ राज्यों से हम बन्धु इकठ्ठे हुए थे, तब वाराणसी में यह निर्णय हुआ की हमें इकठ्ठा होकर आगे बढना है और उसका दायित्व सर्वानुमति से मुझ पर सौंपा गया। देश भर में प्रवास, संपर्क, कार्यकर्ताओं की टोली प्रत्येक राज्य में खड़ी करना, यह कार्य शुरु हुआ। बहुत जल्दी यह ध्यान में आया की, इस संगठन के प्रमुख आधार स्तंभ के रुप में जो कार्यकर्ता हैं, वो भिन्न-भिन्न राजनीतिक विचारों के व्यक्ति हैं, उनमें कम्युनिस्ट कार्यकर्ता गुट के रुप में अधिक सशक्त हैं और अधिक संगठित हैं उनका प्रयास देशभर के माध्यमिक शिक्षकों का संगठन कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभाव में चले ऐसा है। इस पृष्ठभूमि में स्वाभाविक रीति

से अपने कार्यकर्ताओं का प्रयास अपना गुट संगठित कर अपने विचारों का प्रभाव निर्माण करने की दिशा में गतिमान हुआ। १९६७ में माध्यमिक शिक्षक महासंघ के कम्युनिस्ट अध्यक्ष श्री. सत्यप्रियराय (जो आगे चलकर पश्चिम बंगाल के शिक्षा मंत्री बने) उनका हमने संगठन के अध्यक्ष पद के चुनाव में पराभव किया। यहीं से संगठन की मुख्य गतिविधि हमारे लिये कम्युनिस्ट नेतृत्व को हटाना और कम्युनिस्टों के लिये मुख्य गतिविधि संघवालों को पदाधिकारी बनने से रोकना, यह हो गया, यह संघर्ष लगभग १५ वर्ष चला। संगठन की कार्यात्मक गतिविधि धीमी चलती रही, लेकिन इस आपसी संघर्ष के कारण संगठन अधिक सक्रिय नहीं हो पाया। वैसे भी उस समय देश के संविधान के अनुसार शिक्षा राज्य का विषय था। शिक्षक संगठन को अपनी माँगों की लड़ाई राज्य-राज्य में ही लड़नी पड़ती थी। अखिल भारतीय संगठन का काम मुख्यत: राज्यों में संघर्ष को, संगठनात्मक कार्य को आगे बढाने में प्रेरणा देना इतना ही था। यह भी एक कारण था कि अखिल भारतीय संगठन एक हद तक ही अपना प्रभाव निर्माण कर सका। १९७५ के आपात्काल में उस समय की प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी ने शिक्षा को सामयिक सूची (Concurrent list) पर लायी, लेकिन उसके पश्चात भी ४-५ वर्ष स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। १९६० से लेकर सामान्यरुप से १९८० तक देशभर में, राज्य-राज्य में शिक्षक संगठनों द्वारा किये गये संघर्ष द्वारा प्राय: मूलभूत माँगें-वेतन श्रेणी, समय पर वेतन मिलना, पूर्ण वेतन मिलना, सेवा सुरक्षितता तथा सरकारी शिक्षकों को प्राप्त अन्य सुविधाऐं प्राप्त करने में कुछ यश प्राप्त हुआ था। अब जो माँगें सामने आ रही थी उन माँगों की पूर्ति राज्यों में होना संभव नहीं था। उसके लिये अखिल भारतीय स्तर पर संघर्ष करने की आवश्यकता थी लेकिन नेतृत्व के आपसी संघर्ष ने प्रथमत: अपने लोगों ने किया, लेकिन कम्युनिस्ट उसके लिये तैयार नहीं थे। १९८२ में फिर एक बार कटक के बाराबाती स्टेडियम में हुए अधिवेशन में संयुक्त नेतृत्व का नया पर्व प्रारंभ हुआ। इसके कारण अ.भा.माध्यमिक शिक्षक महासंघ का कार्य अधिक गतिमान हुआ, प्रभाव बढ़ा। यही कालखंड है जब प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के साथ ३५ मिनिट आमने सामने

बैठकर चर्चा हुई थी। इसी कालखंड में स्व. इंदिरा जी के पश्चात श्री राजीव गाँधी जब प्रधानमंत्री थे उन्होंने माध्यमिक शिक्षक महासंघ को एक लाख रुपये देकर, संगठन के देशभर के कार्यकर्ताओं को बुलाकर शिक्षानीति के संबंध में अपने विचार हम शासन को दें, ऐसी अपेक्षा व्यक्त की थी। कार्यकर्ताओं का प्रवास, व्यवस्था आदि के लिये देश के शासन ने यह रकम, हमें उसकी माँग न करते हुए भी दी थी। माध्यमिक शिक्षक महासंघ ने बड़ी मेहनत के साथ इस कार्य को किया। इसी काल खंड में अ.भा.माध्यमिक शिक्षक महासंघ दोनों जागतिक शिक्षक संघटनों से जुड़ा। इन घटनाओं ने यह सिद्ध किया की नेतृत्व की होड रोक कर जो संयुक्त प्रयास किया वह एक सफल कदम था। इसके पश्चात अ.भा. माध्यमिक शिक्षक महासंघ लगातार जागतिक संगठन के चपेट में आ गया। महासंघ लगातार जागतिक संगठन से प्रकल्प लेता रहा, उसके लिये पैसा लेता रहा, जब पीछे मुडकर देखा तो उसका जो नुकसान पक्ष था वह भी ध्यान में आया। कार्यकर्ताओं की आदतें बिगडती हुई दिखाई देने लगी। झूँठा हिसाब देना सहज लगने लगा। विदेशगमन की लालसा कार्यकर्ताओं में बढी, जो आगे चलकर आपसी संघर्ष में बदली। यही काल खंड ऐसा रहा कि देश की बदलती स्थिति में शिक्षक संगठन, देश की स्थिति बदलने की ओर निष्क्रिय रहा। एक प्रकार से हमारे सामने राष्ट्र की सेवा, शिक्षा का भारतीयत्व, शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रवादी विचार को प्रभावित करने की दिशा में प्रयास, ये सब बातें केवल बातों में रह गयी। यह है १९६४ से हमने जो मार्गक्रमण शुरू किया, उसका संक्षिप्त में इतिहास।

वैसे १९८५ में कार्यकर्ताओं को ये महसूस होने लगा था की हमने इस क्षेत्र में प्रवेश करके, अपना प्रभावी गुट निर्माण करके जो प्रयास किये थे इनके बावजूद हम लक्ष्य से बहुत दूर हैं। देश के शिक्षक संगठनों की गतिविधि कुंठित हुई है। २०-२५ वर्ष के संघर्ष के बाद पुराने लक्ष्य बड़ी मात्रा में प्राप्त हुए हैं। लेकिन नये लक्ष्य सामने नहीं आ रहे हैं। इस स्थिति में अपने कार्यकर्ता स्थिति का अभ्यास, परिणामों का विश्लेषण आदि बातों का अभ्यास करने में लगे थे। वे कुछ नतीजों पर पहुँचे, पहली बात ये थी। १९६० से १९८५ तक शिक्षक संगठन में शिक्षकों की

माँगे शासन के सम्मुख रखना, उसके लिये प्रयास करना, इतना ही विषय शिक्षकों के सम्मुख रखने के कारण, शिक्षकों पर उसके दो परिणाम हुए। **पहला**-शिक्षक संगठन हम शिक्षकों के मतलब पूर्ति का साधन है। जब हमारी आवश्यकता होगी, कठिनाईयाँ होगी तब हम उसका उपयोग करेंगे अन्यथा उसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं। यह भावना दृढ मूल हो गई। इसी कालावधि में शिक्षक संघ में उनके सम्मुख अपना समाज, अपना राष्ट्र, उससे हमारा नाता, हमसे समाज की अपेक्षा आदि के बारे में कुछ भी न कहने के कारण संगठित शक्ति के आधार पर शिक्षक ''लेना सीखे'', लेकिन समाज को ''देना नहीं सीखे''। **दूसरा**- परिणाम ध्यान में आया की, व्यक्तिगत अथवा सामुहिक माँगे रखना यह एक तात्कालिक लक्ष्य रहता है जो पूरा होने पर आदमी लक्ष्य से स्वाभाविक रीति से विमुख होता है। संगठन को ऐसा लक्ष्य लेना चाहिये जो एक प्रकार से प्रदीर्घ काल तक संगठन को कार्यरत रख सके।

१९६१ से १९८५ तक करीब-करीब २५ वर्ष के मार्गक्रमण का जो अध्ययन अपने कार्यकर्ताओं ने किया, उससे निम्न लिखित बातें सामने आई-

(१) शिक्षक, शिक्षक संगठन को केवल अपने मतलब पूर्ति का साधन मात्र मानते हैं, इस कारण वे केवल अपने मतलब की बात सोचने वाले हुए हैं। शिक्षक संगठन की कुंठित अवस्था इसी के कारण है।

(२) शिक्षक संगठन, शिक्षा की समस्याओं को क्वचित स्पर्श मात्र करता है। लेकिन शिक्षा हमारा विषय है, हम उसके ज्ञाता हैं, देश का और समाज का इसमें हम मार्गदर्शन करेंगे, यह भाव संगठन के नेताओं के मन में भी कभी नहीं उभरा। अत: उस दिशा में पहल भी नहीं हुई।

(३) संगठन के उपरोक्त व्यवहार व कार्यशैली से समाज और शिक्षकों में खाई बढती जा रही है। समाज, शिक्षकों को खुदगर्ज मानने लगा है। जबकी शिक्षक, हमारा वेतन शासन से प्राप्त है, हमें समाज से क्या लेना देना है इस भावना को प्रकट कर रहे हैं। शिक्षक और समाज में यह दूरी, यह अलगाव, न शिक्षकों के हित में है, न अभिभावकों के हित में है, और न शिक्षा के हित में है। इस खाई को हमें योजना पूर्वक पाटना आवश्यक है।

(४) शिक्षा के क्षेत्र में, न शिक्षक संगठन के द्वारा, न शासन द्वारा, न किसी माध्यम द्वारा राष्ट्रीय भावना को जगाना, प्रखर करना, इसका प्रयास शून्य के बराबर है। शासन योजना पूर्वक, ऐसी राष्ट्रीय भावना की जागृति न हो इसके लिये सक्रिय है। वास्तव में राष्ट्रीय भावना की जागृति जब तीव्र और तीव्रतर होती है तो व्यक्ति, त्याग और समर्पण की भावना को अपने जीवन में प्रकट करने लगता है, जिससे प्रगति की गति बढती है।

(५) अपने सहकारियों का यह चिंतन, अपने पचीस वर्ष के अनुभव के आधार पर राष्ट्रहित और समाजहित आधारित चिंतन था। इसमें मुझे या हमें क्या मिलेगा, यह भाव नहीं था। समाज और राष्ट्र की प्रगति ध्यान में रखकर केवल उसके लिये हमें क्या करना चाहिये, इसकी सोच थी। उस समय के सभी संगठन और जिसमें हम प्रमुखत: काम करते थे वह अ.भा.माध्यमिक शिक्षक महासंघ भी इन त्रुटियों से ग्रस्त थे। एक बात और थी, जब हम समूचे देश की शिक्षा का विचार करते थे, वहाँ केवल माध्यमिक शिक्षकों का संघ पर्याप्त नहीं था। इस स्थिती में हमने अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का निर्माण करने का निश्चय किया। यह निर्णय करते समय अ.भा. माध्यमिक शिक्षक महासंघ पूर्णत: अपने प्रभाव में था। फिर भी अपने कार्यकर्ताओं ने नया संगठन स्थापित करना आवश्यक माना। १९८८ में प्रत्यक्ष: इस संगठन की स्थापना का उद्घोष हुआ।

१९८८ से २००१ तक हम एकसाथ, दोनों संगठन संभाल रहे थे। कार्यकर्ताओं का एक विचार यह था, कि अब हमारा नया संगठन शुरु हो गया है, जिसका लक्ष्य स्वतंत्र है व्यापक है, देश और राष्ट्र के हित का है, अब केवल माध्यमिक का संगठन, वह भी कम्युनिस्टों के साथ और जिसमें राष्ट्रीय भाव जगाने की कम्युनिस्टों के साथ के कारण कोई गुंजाईश नहीं है, उसे छोड़ दिया जाय। इससे प्राय: सभी सहमत होते हुए भी एक बार सोचना आवश्यक हो गया था, कि यदि हम छोड़ देते हैं, तो यह एक अखिल भारतीय मान्यता प्राप्त संगठन पर कब्जा कम्युनिस्ट करेंगे और यह बात राष्ट्र के हित की नहीं होगी। अत: यह तय हुआ की ए.आय. एस.टी.एफ को नकारात्मक हेतु के लिये हमें छोड़ना नहीं चाहिये। ध्येयवाद, संगठन

के नये क्षितिज, राष्ट्रवाद को प्रखर करने का लक्ष्य, शिक्षा और समाज को लेकर नया दृष्टिकोण, इन सबके लिये हमें देश में अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ को सक्षम बनाना है। देश के शिक्षकों को इस ध्येयवाद व राष्ट्रभाव से ओतप्रोत करना है। यही हमारा मुख्य कार्य है। यह बात उत्साहवर्धक है कि सभी कार्यकर्ता इसको समझ रहे हैं।

अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के स्थापना का उद्घोष करने के १७ वर्ष पूर्ण हुए हैं। जब स्थापना हुई तब हम मुख्यत: अ.भा. माध्यमिक शिक्षक महासंघ में पूर्णत: व्यस्त थे। उससे राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की ओर कार्य का रुख मोडने में प्रारंभ के ४-५ वर्ष लगे। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का ढाँचा खड़ा करने का प्रारंभ करने में ज्यादा समय लगा। आज भी हम यह कहने की स्थिति में नहीं हैं कि भूतकाल का असर समाप्त हुआ अथवा संगठन ने सारे बदल शत प्रतिशत आत्मसात किये हैं। इतना हम कह सकते हैं कि यह परिवर्तन कार्यकर्ताओं ने स्वीकार किया है। उनमें अब आत्मविश्वास प्रगट हुआ है कि शिक्षकों को हम नया विचार निश्चित समझा सकेंगे। कार्यकर्ताओं का यह विश्वास बहुत महत्वपूर्ण है।

आज हम ये सोच रहे हैं, देश के सभी राज्यों में इस वर्ष के अंत तक पहुँचेंगे। सभी राज्यों में हमारी इकाईयाँ होगी। शिक्षक जगत को राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत करेंगे। जो नये आयाम हमने जोड़ने का प्रयास किया है वे अब दृढमूल हुए हैं। **शिक्षा के प्रकल्पों** पर काम चल रहा है- (१) **अंग्रेजी की शिक्षा तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा-इसका समाज पर परिणाम** (२) **शिक्षा में शारीरिक शिक्षा दिन-प्रतिदिन विलुप्त हो रही है- छात्रों पर इसका परिणाम** (३) **विज्ञान और अध्यात्म, इनकी पढाई साथ-साथ होनी चाहिये।** ये तीन विषय, अखिल भारतीय स्तर पर संगठन ने अभ्यास करने हेतु स्वीकार किये हैं। राष्ट्रीय स्तर पर शारीरिक शिक्षा की स्थिती, जो एक गंभीर विषय बना हुआ है उसका अभ्यास संगठन ने प्रारंभ किया है और अध्यात्मिक शिक्षा शुरू करने की दृष्टि से कोई अभ्यासक्रम बनाने का प्रयत्न संगठन कर रहा है। शिक्षाविदों के आग्रह के बावजूद, संसद में राष्ट्रीय

शिक्षानीति में इसको स्वीकृत करने के बावजूद, प्रत्येक शासन द्वारा इसकी उपेक्षा हुई है।

समाज के साथ की दूरी कम करने की दृष्टि से अभिभावकों से संपर्क करने का कार्यक्रम, भिन्न-भिन्न उपक्रमों द्वारा किया जा रहा है।

राष्ट्रीय भावना जागृति का विषय देश में संघर्ष का विषय बना हुआ है। भारतीयों में राष्ट्रीय भाव न जगे, उनमें राष्ट्रीय गौरव न जगे, उनमें आत्मविश्वास न जगे, सभी भारतीय अतीत से टूट जायें, ये प्रयास अँग्रेज शासन द्वारा डेढसौ वर्ष लगातार किये गये। देश स्वतंत्र होने के बाद वास्तव में इन सभी नीतियों को बदलना चाहिये था लेकिन पिछले ५८ वर्ष से देश की शिक्षा नीति मेकॉले की पटरी पर ही चल रही है। अपने अस्तित्व के लिये हमें राष्ट्रीय स्तर पर इस विषय को लेकर संघर्ष करना पड़ेगा। हमने उसका प्रारंभ कर दिया है।

१५-१७ वर्ष पहले जो सोच, अपने बंधुओं ने शिक्षक संगठन के क्षेत्र में प्रकट की, उन तीन आयामों का विस्तार करने का समय अब आ गया है। ये नये आयाम नहीं हैं, जिन आयामों को लेकर अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का निर्माण हुआ, उन्हीं आयामों का यह विस्तार मात्र है। आगे के पृष्ठों में आने वाले २५ वर्षों में जो कुछ करना है उसे कैसे करें, इस पर विचार प्रकट किये हैं। वह दिन बहुत दूर नहीं जब अपने कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में देश के शिक्षक, शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान करेंगे। भारतीय जीवन दर्शन, भारतीय संस्कृति, उससे विकसित भारतीय जीवन मूल्य, इन पर आधारित २१वीं सदी में अनुकूल समाज का राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत समाज का निर्माण, यह लक्ष्य सामने रखकर उससे सुसंगत शिक्षा, उसको क्रियान्वित कर सकने वाले शिक्षक, ऐसे शिक्षकों का संगठन, यह हमारा लक्ष्य है। पूर्व उल्लेखित आयामों का विस्तार, उस दिशा में करने का प्रयास प्रारम्भ किया है। यह इस विषय का अंतिम शब्द नहीं है। कुछ समय के बाद इसको और विकसित करना पड़ेगा। उस समय के अपने कार्यकर्ता वैसा करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। ❑

संगठन विस्तार

पिछले शैक्षिक वर्ष के अन्त से हम संगठन विस्तार की बात कर रहे हैं। जब हम संगठन विस्तार की बात करते हैं तो पहला विचार संगठन के प्रादेशिक विस्तार का सामने आता है। प्रादेशिक विस्तार का एक भाग, संगठन का कार्य देश के सभी राज्यों में शुरू हो, यह है। आज भारत में जिन राज्यों में संगठन का स्पर्श भी नहीं है, ऐसे करीब-करीब ११ राज्य हैं जिनमें हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, असम, मेघालय, मणिपुर, अरूणाचल, मिझोरम, नागालैंड प्रमुख हैं। इसके अलावा त्रिपुरा, पांडीचेरी, अंदमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप जैसे केन्द्र शासित प्रदेश हैं। २००६ के अन्त तक इनमें से हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा और अंदमान-निकोबार इन राज्यों में अपना कार्य प्रारम्भ हो, ऐसा अपना प्रयास होना चाहिए और प.पू.श्रीगुरुजी जन्म-शताब्दी वर्ष में देश के सभी राज्यों में संगठन का कार्य शुरू हुआ है ऐसी स्थिति हमको निर्माण करनी है।

आज संगठन का काम जिन राज्यों में है उनमें ४ प्रमुख राज्य ऐसे हैं कि जहाँ संगठन का कार्य तो है लेकिन सभी जिलों में काम नहीं है। जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु है। हमें यहाँ कार्य का विस्तार सभी जिलों तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रयास करना होगा। कुछ राज्य ऐसे भी हैं जहाँ ९०% जिलों में कार्य है तो उनके लिए भी यह लक्ष्य रहेगा कि वे सभी जिलों तक पहुँचें।

जिन राज्यों में सभी अथवा प्राय: सभी जिलों में कार्य है वहाँ उन्हें कार्य विस्तार सभी तहसीलों तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रयास करना है। आज की स्थिति में कहीं तीसरा हिस्सा, कहीं आधा हिस्सा तहसीलों में (प्रखण्ड में) कार्य है। अपना लक्ष्य देश के सभी राज्यों में, सभी तहसीलों को कार्ययुक्त करना रहना चाहिए।

कुछ राज्य ऐसे हैं कि जहाँ प्राय: सभी तहसीलों में कार्य है। जैसे राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि हैं, उनके लिए कार्यविस्तार का स्वरूप, प्रत्येक जिले में जैसे तहसील स्थान हैं उसी प्रकार तहसील के समकक्ष गाँव भी हैं। आजकल वहाँ भी प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा आदि सभी के विद्यालय, महाविद्यालय चल रहे हैं। ऐसे समकक्ष गाँवों को ढूंढकर वहाँ भी अपना कार्य शुरू हो याने वहाँ की इकाई बने, ऐसा प्रयास करना चाहिए। उनके लिए यही प्रादेशिक विस्तार की संकल्पना होगी।

कार्यविस्तार जैसे प्रादेशिक है वैसे ही कार्यक्रमों का भी विस्तार होना चाहिए। संगठन की दृष्टि से आज हम शिक्षकों की व्यक्तिगत व सामुहिक समस्याओं को हल करने का काम करते हैं। उसके लिए माँग रखना, प्रदर्शन-निदर्शन करना, आवश्यकता के अनुसार उपवास अथवा हड़ताल करना आदि हम करते हैं। १० हजार स्थानों पर सक्रिय इकाईयाँ व्यावसायिक संगठन के नाम से करें। यह हमारा मूलभूत काम है। लेकिन उसके साथ-साथ हमारे स्वीकृत तीन आयामों के संबंध में अनेक कार्यक्रम-उपक्रम करना, यह भी विस्तार का एक अंग है। संगठन को अधिक व्यापक करने में सदस्यता वृद्धि, यह भी एक अंग हो सकता है। आज शिक्षक संख्या की करीब-करीब १२ या १४% हमारी सदस्यता है। यह सदस्यता कम से कम ३०% तक पहुँचे, यह कार्य विस्तार ही है। आज हम ३०% की बात इसलिए करते हैं क्योंकि इतनी सदस्यता होने पर संगठन, समाज और शासन की दृष्टि से एक मजबूत संगठन माना जाता है। यह सदस्यता बढे, इसके लिए उतना हमारा नया सम्पर्क होता रहना चाहिए। जिससे उनमें से कुछ नए सदस्य प्रतिवर्ष सदस्य बनते रहेंगे। इस सम्पर्क के लिए विविध कार्यक्रम-उपक्रम करना, यह भी संगठन विस्तार का ही अंग है। संगठन को आर्थिक दृष्टि से मजबूत करना, यह भी कार्य विस्तार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज के साथ संबंध बढाना, यह भी कार्य विस्तार का एक अंग है। उसके लिए किए जाने वाले अनेक व विविध कार्यक्रम, यह भी संगठन का विस्तार है। देश में राजनीतिक परिस्थिति में कभी सहकार्य और कभी विरोध करना आवश्यक होता है। जागरूकतापूर्वक उस दिशा में आवश्यक कृति तत्परता से करना, यह भी कार्यविस्तार का अंग है। शिक्षा विषय में नए सोच अभ्यासपूर्वक रखना, उसके लिए सर्वेक्षण, चिंतन, चर्चासत्र, प्रकाशन आदि उपक्रम करना, यह भी संगठन का कार्य विस्तार है। देश की समस्याएँ सामने रखकर संगठन को कृतिशील एवं गतिशील बनाना, यह भी कार्य विस्तार का ही अंग है। शैक्षिक महासंघ का सर्वांगीण विकास याने कार्यविस्तार। अत: हम सभी अंगों में प्रगति करें।

कार्यविस्तार, यह एक बहुअंगी संकल्पना है। ऊपर हमने कुछ बिन्दुओं का जिक्र किया है। स्थल और काल इन दोनों को सामने रखकर तथा राष्ट्र व समाज का हित सामने रखकर शिक्षा क्षेत्र के दायरे में अनेकविध कार्यक्रम-उपक्रम करें । यही संगठन का कार्य विस्तार है, इतना ही आपके सम्मुख रखने का प्रयास किया है। अपनी प्रतिभा का उपयोग करके अपने कार्यक्षेत्र में हमको सोचना चाहिए। ऊपर जो लिखा हुआ है, वह मानिये कि कम से कम कार्यक्रम हैं। उसका विस्तार आप कर सकते हैं। ❑

वार्षिक कार्यक्रम

जिन सिद्धांतों, विचारों तथा लक्ष्य का उद्घोष नया संगठन प्रारंभ करते समय हमने किया है, उनको साकार करने के लिये कुछ निश्चित कार्यक्रम नियमित रूप से प्रतिवर्ष क्रियान्वित करना आवश्यक रहता है। कार्यकर्ता जब अपने कार्यक्षेत्र में नियमित रूप से तथा प्रतिवर्ष कार्यक्रम क्रियान्वित करता है तब उसके अनुरूप संगठन विकसित होता है और उसकी पहचान बनती है। ऐसे श्रद्धावान व कर्मठ कार्यकर्ताओं की संख्या जितनी अधिक उतनी उस संगठन की शक्ति अधिक, यह अपना अनुभव है। अत: निम्न छ: कार्यक्रमों की योजना की है।

१. संकल्प दिवस २. नववर्ष दिवस ३. सदस्यता अभियान ४. व्यापक शिक्षक सम्पर्क अभियान ५. समाज सम्पर्क कार्यक्रम ६. वार्षिकोत्सव.

१) संकल्प दिवस-संकल्प दिन का उद्देश्य शिक्षकों में दायित्व बोध की निर्मिती अथवा कर्तव्यभाव का जागरण है। शिक्षकों के मानसिक परिवर्तन के बिना शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन असंभव है। यह कार्यक्रम व्यापक पैमाने पर करने से वातावरण में थोडा परिवर्तन दिखाई देगा।

१२ जनवरी स्वामी विवेकानन्द जयन्ती से २३ जनवरी नेताजी सुभाष जयन्ती के मध्य, यह कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर सम्पन्न करना चाहिए। जहाँ कार्यकर्ता हैं वहाँ कार्यक्रम होना चाहिए। शिक्षकों के इस कार्यक्रम में समाज के प्रभावी लोगों की उपस्थिति होनी चाहिए। इसकी समाचार पत्र एवं दृश्य श्रव्य वाहिनी पर पर्याप्त चर्चा रहे। समाज इससे शिक्षक के प्रति आदर भाव से देखने लगेगा।

२) नववर्ष दिवस- सद्यस्थिती में भारतीय कालगणना उपेक्षित सी हो गयी है। राष्ट्रीय भावना जागृति के लिए अपना नववर्ष सार्वजनिक रुप से सम्पन्न करना यह कार्यक्रम का स्वरुप है। हम पाश्चात्य कालगणना की टीका-टिप्पणी न करते हुए अपनी कालगणना का कार्यक्रम समाज में प्रस्थापित करें, ऐसी इसके पीछे की कल्पना है। यह कार्यक्रम चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को और आवश्यकता के अनुसार कुछ

थोड़ा आगे पीछे हम सम्पन्न कर सकते हैं। अर्थात उसी दिन का कार्यक्रम अधिक महत्वपूर्ण रहेगा। लेकिन भेंटपत्र, संदेश, विविध स्पर्धाएं आदि जैसी बातें कुछ आगे पीछे चल सकती हैं। जुलूस, सभा, चर्चासत्र, यह बातें उसी दिन होना अधिक उपयुक्त होगा। इन सभी बातों का लक्ष्य भारतीयत्व की जागृति होना चाहिए। यह कार्यक्रम भी जहाँ इकाई व कार्यकर्ता हैं वहाँ सम्पन्न होना चाहिए। विद्यालय में प्रार्थना सभा अथवा प्रत्येक कक्षा में इसके महत्व की चर्चा अवश्य की जावे।

३) सदस्यता अभियान- आजकल आजीवन सदस्यता के कारण सदस्यता अभियान का संकोच हुआ है कार्यवृद्धि में यह एक बाधा है। राज्य संगठन द्वारा सत्र के प्रारम्भ में १५, २१ अथवा ३० दिन आवश्यकता के अनुसार सदस्यता अभियान के लिए समय तय करना चाहिए। उस अवधि में संगठन की पूरी शक्ति योजनापूर्वक इस अभियान में लगानी चाहिए। अनुभव से यह ध्यान में आया है कि धनप्राप्ति के लिए आजीवन सदस्यता अभियान एक सफल मार्ग सिद्ध हुआ है लेकिन साथ ही सदस्य सम्पर्क, कार्यकर्ता सम्पर्क एवं इन दोनों के माध्यम से नए कार्यकर्ता चुनना, इन बातों में कमी आयी है। कार्यकर्ता की घर-घर जाकर काम करने की प्रवृत्ति में भी कमी आयी है। कष्ट और मेहनत से बचने की भावना में वृद्धि हुई है। ये बातें संगठन के मूल तत्वों पर ही कुठाराघात है। इससे बचने के लिए सदस्यता अभियान में वार्षिक सदस्य बनाने के साथ, आजीवन सदस्यों से मिलकर, उन्हें रसीद देकर, दानस्वरुप पैसा प्राप्त करना, इसको जोड़ देना चाहिए। इस अभियान का अर्थ है हम नए-पुराने सभी सदस्यों के घर पर जाकर उनसे धन माँगें और यथासम्भव उनको कुछ दायित्व देने का भी प्रयास करें, ऐसी भूमिका इसमें रहनी चाहिए।

४) व्यापक शिक्षक सम्पर्क- हम जो कार्यविस्तार की बात करते हैं तो सर्वप्रथम सामने बात आती है सदस्यता वृद्धि की लेकिन सदस्यता वृद्धि होगी कैसे? बहुत स्थानों पर कार्यकर्ताओं ने मन बना लिया है कि जो अपने हैं उनकी सदस्यता करो और जो बाकी लोग हैं, उनके पास जाने का कोई लाभ नहीं है। अत: हम वह कष्ट नहीं करते। यह सोच प्रथमदृष्टया तर्कशुद्ध लगती है लेकिन वह न तर्कशुद्ध

है न सही, वह गलत है। सदस्यता वृद्धि तभी सम्भव है कि जब हम, जो अपने सम्पर्क में नहीं हैं उनके पास जाकर सम्पर्क करेंगे, मित्रता करेंगे, विचारों का आदान-प्रदान करेंगे, जिसके कारण उन्हें हम सदस्य बनाने की स्थिति में लाएं और वह व्यक्ति भी अपनी बात मानने की मन: स्थिती में आए। हम एक बार यदि इसी प्रकार से प्रयास प्रारंभ करते हैं तो इस वर्ष और उसके पश्चात प्रतिवर्ष लाभ होता दिखाई देगा।

आज हम शिक्षक समुदाय में १२% के करीब हैं। ८८% शिक्षक हमारे दायरे के बाहर हैं। उनमें से १०% लोग किसी अन्य विचार धारा से संलग्न हैं। करीब-करीब ७५% शिक्षक कहीं भी बंधे हुए नहीं हैं। वे केवल अपने मतलब से बंधे हुए हैं और वही हमारा कार्यवृद्धि का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इनसे सम्पर्क करना और उन्हें अपने से जोड़ना, यही सदस्यता का विस्तार है।

यदि हमें एकदम सबको मिलना कठिन या असम्भव लगता हो तो प्रतिवर्ष राज्य की शिक्षक संख्या का कुछ प्रतिशत (सामान्यत: १०%) नए लोगों को सम्पर्क करना और इस प्रकार पुराना सम्पर्क कायम रखते हुए नया सम्पर्क बढ़ाते जाना, यह करने से अल्पावधि में हम १२% से २५% तक आगे बढ़ सकते हैं। इसके लिए मेहनत से काम करने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या बढाने की आवश्यकता रहेगी। लेकिन इसी रास्ते से हम संगठन के नाते देश में प्रथम क्रमांक पर पहुँच सकेंगे।

इस नए सम्पर्क के लिए रक्षाबंधन, दशहरा, हमारा राष्ट्रीय विजयपर्व, संक्राति, इन जैसे किसी अवसर को तय करके, हम सम्पर्क योजना बनाएं। इसके लिए भी आवश्यकता के अनुसार १०-१५ दिन का अभियानपर्व चलाना उपयुक्त होगा। प्रतिवर्ष यही पर्व, यही कालखंड पद्धति कायम रखने से उसका संगठन के जीवन में एक स्थान बनेगा।

५) समाज सम्पर्क कार्यक्रम- हमने अपने ३ नये आयामों में समाज और शिक्षक इन दोनों में जो खाई पैदा हुई है, उसको मिटाने को स्थान दिया है। इस कार्यक्रम को उतनी ही गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। अभी तक कुछ स्थानों

पर कार्यकर्ताओं ने रक्तदान जैसे कार्यक्रम किए हैं। सेवा कार्य प्रारम्भ के नाते यह ठीक भी है। लेकिन उपक्रमों में बहुत विविधता और नावीन्य निर्माण किया जा सकता है। चर्चासत्र हो सकते हैं, समाज के सम्मुख समस्याएँ रखी जा सकती हैं, जो छात्रों से संबंधित हैं, जो इतिहास पढाया जा रहा है वह छात्रों को गलत दिशा देने वाला है। इसको चर्चा का विषय बनाया जा सकता है।

निमंत्रण अधिकाधिक लोगों को देना, यह इस कार्यक्रम का मुख्य अंग होना चाहिए। यह जानते हुए भी कि उपस्थिति कम रहेगी। इसको बड़ी संख्या में समाज सम्पर्क का साधन बनाया जा सकता है। अभिभावक यद्यपि नहीं आते हैं तो भी उनके मन में यह बात रहती है कि हमको इन लोगों ने बुलाया था। प्रारंभ में इतना ही प्राप्तव्य मानकर इसको करना आवश्यक है। इसका समय राज्य की स्थिति के अनुसार तय किया जा सकता है और एक या डेढ दिन के कार्यक्रम के रुप में इसे सम्पन्न किया जा सकता है।

६) वार्षिकोत्सव- वार्षिकोत्सव प्राय: सभी राज्यों में किसी न किसी प्रकार से मनाया जाता है। कई स्थानों पर एक वार्षिकोत्सव राज्य स्तर का, एक विभाग अथवा समकक्ष स्तर का और एक स्थानीय इस प्रकार से मनाया जाता है। वह व्यवस्था राज्य, जिला व स्थानीय इनके आपसी तालमेल की बात है। वार्षिकोत्सव मनाने का हेतु शिक्षकों से निकट सम्पर्क करना है। क्रीडास्पर्धा, गायनस्पर्धा, नाट्यस्पर्धा, काव्यस्पर्धा, कथास्पर्धा आदि भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों द्वारा गुणी शिक्षकों को सम्पर्क में लाना और कार्य में गुणी शिक्षकों को जोड़ने का एक अवसर हो सकता है। वर्षभर में कार्यकर्ताओं को आनंद देने वाला एक अवसर यह भी उसका एक पहलू है। जो शिक्षक अन्य अवसरों पर सम्पर्क में आने में ज्यादा उत्साहित नहीं रहते है, वे शिक्षक ऐसे अवसरों पर जरूर शामिल हो जाते हैं। हम वार्षिक सभा, वार्षिक वृत्त, वार्षिक लेखा आदि बातें सम्पन्न करते हैं। उसमें केवल निष्ठावान शिक्षक ही शामिल होते हैं। यह सभी बातें संगठन चलाने की दृष्टि से आवश्यक हैं उन्हें करना ही पड़ेगा। वार्षिकोत्सव में इन बातों का कुछ हिस्सा जरूर रखा जा सकता है लेकिन यह बातें वार्षिकोत्सव नहीं हैं। उस अवसर का उपयोग गुणी

शिक्षक लाने के साथ-साथ समाज के गुणी श्रेष्ठ लोगों को सम्पर्क में लाने का अवसर बन सकता हैं। अत: किसी न किसी रूप में वार्षिकोत्सव व्यापक पैमाने पर मनाना, सम्पर्क का माध्यम इस हेतु बनाना, संगठन के लिए उपयुक्त होगा।

इन ६ अवसरों का चयन एक विशिष्ट हेतु से किया है। संकल्प दिन के माध्यम से शिक्षकों के ऊपर कर्तव्यबोध व राष्ट्रभाव की निर्मिति, नववर्ष के माध्यम से भारतीयत्व की जागृति, सदस्यता अभियान, संगठन का विस्तार व आर्थिक आधार इस दृष्टि से, व्यापक शिक्षक सम्पर्क अभियान देश में संगठन को क्रमांक एक की ओर ले जाने का प्रयास, समाज सम्पर्क के माध्यम से समाज को अपने साथ लेने का प्रयास, वार्षिकोत्सव के द्वारा गुणी शिक्षकों से सम्पर्क और शिक्षकों के लिए एक आनंद का अवसर देकर उन्हें तरोताजा करना संगठन को चलाने की दृष्टि से, ये सभी बातें उपयुक्त होंगी, कार्यकर्ताओं को भिन्न-भिन्न कार्यक्रम देने वाली होगी। सब प्रकार के शिक्षकों को आकृष्ट करने वाली होगी। संगठन के स्वीकृत किए हुए ३ आयामों को क्रियान्वित करने वाली होंगी, यह सब मिलाकर हमारे संगठन की एक विशिष्ट प्रकार की पहचान बनेगी। यह ध्यान में रखना होगा कि ये नियमित वार्षिक कार्यक्रम होंगे। कुछ संगठन इनमें से कुछ न कुछ करते ही हैं। यह वर्षभर के कार्यक्रम तय करने से देशभर में संगठन को एक दिशा मिलेगी।

इन नियमित कार्यक्रमों के अलावा प्रासंगिक कार्यक्रमों की योजना करना भी आवश्यक रहता है जो अपनी सैद्धान्तिक पहचान बनाएंगे। लेकिन ऐसे प्रासंगिक कार्यक्रमों के कारण नियमित कार्यक्रमों में ढिलाई, कटौती आदि नहीं आनी चाहिये, इसका हमें ध्यान रखना पड़ेगा। ❑

गुरुजनों के अधीन हुए बिना कभी, भी शक्ति केन्द्रीभूत नहीं हो सकती और बिखरी हुई शक्तियों को केन्द्रीभूत किये बिना, कोई महान् कार्य नहीं हो सकता।

-श्रीगुरुजी

२००६ का लक्ष्य

परम पूजनीय श्रीगुरुजी की जन्मशताब्दी २००६ फरवरी में प्रारम्भ हुई है। हम सभी जानते हैं कि शिक्षा क्षेत्र की अपनी गतिविधि में प. पू. श्रीगुरुजी प्रेरक थे और मार्गदर्शक भी थे। हम सभी के लिए व्यक्तिश: भी और संगठन के नाते भी उनका पुण्यस्मरण अपनी कृति के द्वारा करना अत्यंत उचित होगा। रा.स्व.संघ और उनके अनुषांगिक कार्य में सभी की यह भावना प्रकट हुई है। सभी की यह समान भावना होने के बावजूद हर एक संगठन को अपना-अपना लक्ष्य, अपने-अपने क्षेत्र, उसकी स्थिति, उसकी आवश्यकताएँ यह ध्यान में रखकर निश्चित करने होंगे। हम उसी का विचार यहाँ करते हैं।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ जिस परिस्थिति से गुजर रहा है, उसकी जो समस्याएँ हैं, वह ध्यान में रखकर हम अपना लक्ष्य तय करें।

यह शताब्दी वर्ष अपने लिए एक महत्त्वपूर्ण आगे का कदम सिद्ध हो, ऐसा हम सबको लगना चाहिए। यह अगला कदम क्या हो, यही हमें तय करना है।

हम यदि पीछे मुड़कर देखें तो ऐसा विकासक्रम हमारी दृष्टि के सामने आएगा- **१)** तीन नए आयाम लेकर संगठन की स्थापना, **२)** भौगोलिक दृष्टि से एक हद तक याने २० राज्यों में पहुँचे हैं। हमें २००६ में शेष प्रमुख १० राज्यों में पहुँचना है। अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ और सभी संलग्न संगठनों को स्वीकृत ३ आयामों के अनुसार उसके अनुकूल कार्यक्रम देकर उन्हें सर्वत्र क्रियान्वित करना, यह हमारा लक्ष्य है। इस दृष्टि से बैंगलोर के अभ्यासवर्ग में, इस दिशा में आगे बढ़ने की दृष्टि से हमने कई बातों पर चर्चा की। उस चर्चा को अब हम अंतिम स्वरूप देंगे। जहाँ हम पहले ही जिला स्तर पर पहुँचे हैं वहाँ तहसील स्तर पर और जहाँ तहसील स्तर पर पहुँचे हैं वहाँ हम उसके भी आगे ब्लॉक अथवा खंड स्तर तक पहुँचें। इन सभी बातें को हम दूसरे ढंग से कहेंगे कि देश में ११,००० स्थान ऐसे हों कि जहाँ संगठन के आदेश पर उसका क्रियान्वयन होगा। २००६ तक ११००० स्थानों तक संगठन

को सक्रिय करना यह हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

चर्चा में जो और बातें आयी हैं वे हैं कि हमारी गतिविधि व्यापक हो। हम शिक्षकों के हितसंबंधों में पूर्ण जागरूक और सक्रिय रहते हुए और भी पूरक गतिविधियाँ संगठित करें। जैसे विद्वत परिषद का गठन, शिक्षा में, राज्य और केन्द्र में विषय चुनकर प्रकल्प क्रियान्वित करना। यह व्यवस्था भी प्रत्येक राज्य में निर्माण होनी चाहिए।

एक बात की चर्चा हमने और की कि जो शिक्षक आज हमसे संबंधित नहीं हैं उनको भिन्न-भिन्न उपक्रमों द्वारा सम्पर्क में लाना। आज हम केवल १० अथवा १२% शिक्षकों के सम्पर्क में हैं। हम कम से कम ४०% शिक्षकों का सम्पर्क करें। ऐसा लगता है सदस्यता सम्पर्क आदि के संबंध में हम रूक गए हैं। आगे नहीं बढ पा रहे हैं। इस स्थिति में परिवर्तन और हमारा सम्पर्क का आक्रामक रूख, यह भी हमारा लक्ष्य होना आवश्यक है।

संगठन की आर्थिक दु:स्थिति जो संगठन की प्रगति में बाधा डालती है उसको हम बदलें। धन की कमी यह प्रगति को रोकने वाली स्थिति हमारी न रहे। इस दृष्टि से आर्थिक मजबूती, यह भी एक लक्ष्य हमको सामने रखना चाहिए। इन सभी बातों के परिणामस्वरूप देश में कम्युनिस्टों को और मुट्ठीभर राजनीतिक दृष्टि से बंधे हुए लोगों को छोड़कर शेष सभी को साथ लेकर, अपने नेतृत्व में चलने वाला एक मंच का निर्माण व उस मंच को क्रियान्वित करना, यह भी हमारा लक्ष्य होना चाहिए। आगामी वर्ष में हमें उपरोक्त लक्ष्यों तक पहुँचना हमारा संकल्प हो। इसके लिए अधिक संख्या में कार्यकर्ता, अधिक समय देने वाले कार्यकर्ता, जिनकी सूझबूझ और कार्यकुशलता विकसित हुई है ऐसे कार्यकर्ताओं का निर्माण हमें करना पड़ेगा। २००६ के अंत तक यदि हम इन बातों को पूरा करते हैं तो अपने संगठन के लिए वह एक मील का पत्थर सिद्ध होगा, इसमें कोई संशय नहीं। ❑

अधिवेशन

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का त्रैवार्षिक अधिवेशन २००६ में होना अपेक्षित है। २००६ अपने लिए एक प्रेरणादायी समय है। एक तो हम आगे का मार्गक्रमण जिस प्रकार करने की बात सोच रहे हैं उस दृष्टि से एक प्रभावी अधिवेशन करना एक आवश्यकता है। यह एक विशेष बात है कि परम पूजनीय श्री गुरूजी की जन्मशती २००६ में ही है। श्री गुरूजी का महत्त्व हमारे लिए, याने ए.बी.आर.एस.एम. के लिए विशेष रूप से है। शिक्षक संगठन का पुराना स्वरूप बदल कर उसे नया स्वरूप देना, यह नया स्वरूप कैसा होना चाहिए, ये सारी बातें उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन के कारण है। हम उनके कृतज्ञ हैं। अत: उनके जन्मशताब्दी वर्ष में उनके स्मरण में हम कुछ कर दिखाएं, यह भी एक श्रद्धाभाव है। हम जो कुछ करने जा रहे हैं उसके दर्शन इस अधिवेशन में होना अपेक्षित है। यह अधिवेशन जिस ढंग से हम सम्पन्न करेंगे उसका दर्शन राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का एक सही परिचय देश को देने वाला होगा। ऐसा दर्शन देने वाला अधिवेशन हमको आयोजित करना है।

यह अधिवेशन प्रभावी करने के कुछ बिंदु आप में से कुछ बंधुओं ने दिए हैं पर और अधिक सुझावों की अपेक्षा है। पहला बिंदू अधिवेशन में सदस्यों का व्यापक प्रतिनिधित्व होना है। देश के सभी जिलों के प्रतिनिधि अधिवेशन में उपस्थित होना, यह अधिवेशन प्रभावी करने का पहला बिन्दू है। हम यहां यद्यपि जिलास्थान का आग्रह रख रहें हैं, उपस्थिति अधिकाधिक तहसीलों से भी होनी चाहिए। जिलास्तर के पदाधिकारी और अन्य कार्यकर्ता उसमें प्रयासपूर्वक उपस्थित करने चाहिए। दूसरा बिन्दू समाज के प्रमुख शिक्षाविदों की उपस्थिति। यह अधिवेशन शिक्षकों के लिए केवल एक एकत्रीकरण न मानते हुए, एकत्रीकरण के साथ संगठन का समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्र के प्रमुखों के संपर्क और सहयोग का चित्र प्रस्तुत करने वाला होना चाहिए। इस अधिवेशन में तीसरा बिंदू पारित होने वाले प्रस्ताव,

देश की शिक्षा क्षेत्र की बुनियादी समस्या के संबंध में और गंभीर कृति का निर्देश देने वाले होने चाहिए। अनेकानेक विद्वानों की सहमति उन विषयों में प्राप्त होने से उनकी गंभीरता बढ़ेगी। उसकी प्रसिद्धि यह अगला बिंदू है। उसकी पर्याप्त व्यवस्था योजनापूर्वक अभी से क्रियान्वित करना चाहिए। अधिवेशन की व्यवस्था, अनुशासन यह बातें भी प्रभाव डालने वाली होती हैं। उसकी भी चिंता करनी चाहिए। अधिवेशन में खर्च के विषयों को लेकर काफी कठिनाइयां होती हैं। उनकी भी अभी से चिंता करनी होगी। अधिवेशन डेढ़ या दो दिन का होता है जिसमें पर्याप्त काम भी नहीं होता और प्रभाव भी कम होता है। यह सोचने की बात है कि क्या हम अधिवेशन चार दिन का कर सकेंगे? प्रत्यक्ष में यह अधिवेशन ७० से ७२ घंटों का ही होता है लेकिन हम इतना भी कर सके तो वह अच्छा होगा। उसका प्रभाव भी अधिक रहेगा। यह कठिन जरूर है लेकिन कठिन बात सफलतापूर्वक करने से ही यश दुगना हो जाता है।

यदि समय थोड़ा अधिक प्राप्त होता है तो अधिवेशन में अधिक विषयों पर चर्चा, अधिक विद्वानों का मार्गदर्शन, कार्यकर्ताओं को विचार विनिमय के लिए अधिक समय और थोड़ा समय शिक्षकों के कलागुणों के प्रदर्शन के लिए हम समय दे सकते हैं। इसका भी प्रभाव में अपना एक स्थान रहता है।

अधिवेशन यदि अनुशासनपूर्ण संचालित होता है तो उसका प्रभाव समाज पर तो होता ही है, साथ ही वह सहभागियों के लिये प्रेरणादायी होता है। इस दृष्टि से भी हमें सतर्क व प्रयत्नशील रहना चाहिये।

हम अभी से याने लगभग एक वर्ष पहले से इसमें जुटेंगे तो यह संभव है। ऐसा अधिवेशन करना समाज के लिए संगठन का प्रभाव व्यक्त करने वाला होता है और संगठन के साथ-साथ ऐसे अधिवेशन को सम्पन्न करने वाले कार्यकर्ताओं की प्रतिष्ठा और सम्मान भी बढ़ाता है। ❑

अपने नेतृत्व में देश के शिक्षक संगठनों का मंच

शिक्षक संगठन में हमारा प्रयास पिछले ४० वर्षों में इस प्रकार हुआ-प्रथमत: अपने कार्यकर्ता राज्य के और देश के भिन्न-भिन्न संगठनों में सक्रिय थे। हमने उन्हें वहीं सक्रिय होने को कहा। इस कालखंड में माध्यमिक शिक्षकों के क्षेत्र में हम अधिक अग्रेसर हुए और हमारा जो पहला लक्ष्य था कि इस संगठन में कम्युनिस्टों का प्रभुत्व नष्ट करना, हमने करीब-करीब सफलता पायी। इसके पश्चात् बहुत चिंतन के बाद हमने अगला कदम उठाया। राष्ट्रवादी विचारवाले शिक्षक, जो राज्य में और केन्द्र में भिन्न-भिन्न संगठनों में बिखरे हुए कार्यकर्ता थे, उनको एकत्र कर हमने सभी स्तरों का एक देशव्यापी संगठन अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के रूप में खड़ा किया। यह करते समय सैद्धान्तिक स्तर पर हमने दो बातें एक साथ की, एक शिक्षक संगठन संकल्पना में परिवर्तन। उस समय तक सभी संगठन जिनमें हम भी थे, केवल शिक्षकों के हित संबंधों का रक्षण करने वाले शिक्षक संगठन थे। केवल शिक्षकों के हित संबंधों का रक्षण, इतनी ही संकल्पना रूढ़ थी। हमने इस संकल्पना में बहुत चिंतन के बाद एक परिवर्तन किया। शिक्षक हितसंबंधों के कार्य को कायम रखते हुए, उसमें हमने तीन बातों को जोड़ा- **हम शिक्षक संगठन के नाते शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा की समस्याओं को भी देखें, यह पहला आयाम है। दूसरा आयाम है सामाजिक ऋण का बोध शिक्षकों में जगाकर शिक्षक और अभिभावक के मध्य निर्मित दुर्भाग्यपूर्ण खायी को मिटाना और तीसरा आयाम है देश में कोई भी संगठन राष्ट्रवादी भाव को लेकर शिक्षा और शिक्षकों का विचार करने वाला नहीं था। इसको सामने रखकर शिक्षक संगठन और शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रभाव की जागृति का संकल्प हमने किया।** यह अपना कदम शिक्षक संगठन के क्षेत्र में शिक्षक संगठन को नया

स्वरूप देने का कदम था। अब तक के प्रयासों से हमने कम्युनिस्टों के प्रभाव को रोका था। उसके पश्चात हम एक कदम आगे बढ़े और उसके द्वारा हमने शिक्षक संगठन की भारतीय जीवनदर्शन के आधार पर रचना का विचार किया। शिक्षक संगठन केवल मालिक और नोकर के बीच अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संघर्ष, इतने ही अधिष्ठान को बदलकर हम शिक्षक, राष्ट्र की सेवा में समर्पित भाव से सेवा भावी शिक्षकों का संगठन जो आवश्यकता पड़ने पर समाज व राष्ट्रहित ध्यान में रखकर अपनी और शिक्षा की आवश्यकताओं के लिये संघर्ष करने वाला संगठन, यह युगानुकूल अधिष्ठान देने की दृष्टि से सक्रिय हुए हैं। अब हम अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के माध्यम से इस नयी संकल्पना को देश में स्थापित करने के प्रयास में हैं। हमारी गतिविधि का सारा लक्ष्य, देश में शिक्षक संगठन में इस संकल्पना को अपने व्यवहार से व शक्ति के आधार पर दृढ़मूल करने का है। यह कार्य हमें बहुत जल्दी पूर्ण करने की आवश्यकता है।

इसके आगे का कदम शिक्षा के क्षेत्र में जड़वाद पर आधारित कम्युनिस्ट विचारधारा को निष्प्रभ करने का है। आज हमने उनको संगठनात्मक स्तर पर रोका है इसके आगे का कदम शिक्षा के क्षेत्र में सभी मोर्चों पर उनको पराभूत करने का है और साथ ही अपने भारतीयत्व के अधिष्ठान को मजबूत करना है। संगठनात्मक दृष्टि से इसके लिए यह आवश्यक है कि हम कम्युनिस्ट तबके को समाज से अलग-थलग करें। यह अगला कदम एक प्रकार से आक्रामक कदम है जिसके लिए बहुत मेहनत करनी आवश्यक होगी।

आज देश में और राज्यों में संगठनों की भरमार है। सभी का लक्ष्य मात्र शिक्षकों को लाभ पहुंचाने तक ही सीमित है। इनमें से कुछ संगठन राजनीतिक दल से सम्बद्ध विशेषकर कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बद्ध हैं। देशभर में कांग्रेस द्वारा संचालित नामलेवा संगठन नहीं के बराबर हैं। लेकिन बहुसंख्यक संगठन किसी राजनीतिक दल के अंगभूत संगठन नहीं हैं। हाँ यह संभव है कि कम्युनिस्ट पार्टी के संगठन न होते हुए भी कुछ उनके प्रभाव में हैं। लेकिन ऐसे भी संगठनों की संख्या बहुत नहीं हैं। ऐसे कम्युनिस्ट प्रभाव के नीचे अथवा कम्युनिस्ट प्रभाव के संगठनों को इकट्ठा

करने का प्रयास NCCITO (National Cordination Committee of India Teacher Organisation) कम्युनिस्टों ने इस संगठन को खड़ा करके किया, जो सफल नहीं हो सका। क्योंकि एन.सी.सी. आय. टी.ओ. देश के बहुसंख्य शिक्षक संगठनों को अपने साथ लेने में असफल रहे। अब हमारी बारी है। राष्ट्रवादी प्रवृत्ति के कार्यकर्ताओं को तो हमने इकट्ठा किया। उनका एक देशव्यापी संगठन सक्रिय हुआ। लेकिन देश के सैंकड़ों गैरकम्युनिस्ट संगठनों को इकट्ठा किए बगैर हम कम्युनिस्टों को सही अर्थ में मात नहीं दे सकेंगे। अतः अब हमारा आक्रामक कदम यही होगा कि कोई न कोई समान समर्थन प्राप्त हो सके, ऐसे विषय को आधार बनाकर, ऐसे संगठनों को जोड़कर, देश में एक गैरकम्युनिस्ट मंच का निर्माण कुशलता से करना चाहिए।

देश में आज जो राजनीतिक माहौल है, उसमें राष्ट्रवादी और उनके सहप्रवासी एक ओर और उनके विरोध में बाकी सभी, जिनका वर्णन हिंदुत्व विरोधी अथवा सांस्कृतिक राष्ट्र संकल्पना विरोधी, इन शब्दों में किया जा सकता है दूसरी ओर, आमने सामने हैं, लड़ाई अब शुरू हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रवादी और उनके सहयोगी इनका तबका प्रभावी करना इस दृष्टि से, हम उनको इकट्ठा करने के लिए कौन सी बुनियाद चुनते हैं यह बात महत्त्व की रहेगी और साथ ही उस बुनियाद पर अन्य गैरकम्युनिस्ट संगठनों को इकट्ठा करना, यह पर्याप्त मेहनत का काम है। लेकिन आज की देश की स्थिति ध्यान में रखकर, यह आह्वान हमको स्वीकार कर, यश प्राप्त करना होगा। ❑

जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।

-श्रीगुरुजी

अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ और जागतिक शिक्षक संगठन

जब हमारे बहुत से कार्यकर्ता अ.भा. माध्यमिक शिक्षक महासंघ में सक्रिय थे, तब १९८५ में संगठन का अध्यक्ष अपना और महामंत्री कम्युनिस्टों का था। दुनिया में उस समय WCOTP (World Confedaration of Organisation of Teachers Profession) फिजे (एक जर्मन शब्द), इफ्टो आदि चार जागतिक संगठन सक्रिय थे। इनमें से दो WCOTP सामान्यत: गैर साम्यवादी और फिजे साम्यवादी प्रमुख थे। १९८५ में अ.भा. माध्यमिक शिक्षक महासंघ के महामंत्री ने उनकी दलीय आधार पर प्राप्त सलाह से AISTF को फिजे (communist teachers organisation) से जोड़ दिया। उसका पता अपने अध्यक्ष और कार्यकारिणी को भी नहीं था। यह बात ध्यान में आते ही अपने कार्यकर्ताओं ने कड़ा रूख अपनाया। वैसे दोनों गुट संख्या में बराबर थे। इस संघर्ष का अंतिम फैसला यह रहा की १. कम्युनिस्ट गुट ने जो संलग्नता की थी, उसे तात्कालिक रूप से रद्द घोषित किया और नये सिरे से उन्होंने आवेदन देना स्वीकार किया। २. AISTF Non Communist world Teacher Organisation के साथ भी संलग्न हो सकेगा, ये उन्होंने स्वीकार किया और ३. किसी भी जागतिक संगठन से प्राप्त निर्देशन AISTF की राष्ट्रीय कार्यकारणी में सहमति किये बगैर उसका क्रियान्वयन नहीं किया जायेगा, यह तय किया। इन तीन शर्तों के साथ AISTF ने कम्युनिस्ट गुट द्वारा नये आवेदन देने पर फिजे के साथ संलग्नता को मान्यता दी। इसके परिणाम स्वरूप १९८६ में AISTF की संलग्नता WCOTP के साथ भी हो गयी। इस समय AISTF के पहले ही अ.भा.प्राथमिक शिक्षक महासंघ AIPTFऔर AISTF (All India Secondary Teachers Fedration) ये दो संगठन WCOTP से संलग्न हुए थे। ये कहा जा सकता

है, कि यदि कम्युनिस्ट गुट का AISTF को फिजे से जोड़ने का गलत व्यवहार न होता, तो शायद हम WCOTP तक पहुँचने का विचार उस समय नहीं करते।

देश स्तर का व्यावसायिक संगठन जागतिक स्तर के व्यावसायिक संगठन से जुड़े, इस में आम तौर पर किसी का विरोध नहीं रहता है। उस समय भी AISTF की कार्यकारिणी भी इस जागतिक संगठन से संलग्नता पर सहजता से सम्मत हुई थी। १९८६ से WCOTP से संलग्न होने के बाद करीब ४ वर्षों के पश्चात फिजे संगठन टूट गया। जैसे ही बर्लिन दिवार गिरी, पूर्व व पश्चिम बर्लिन इक्ट्ठे हुए और रूस में भी कम्युनिझम छोड़ राष्ट्रवाद पकड़ने की घटना हुई, फिजे का अस्तित्व ही नहीं रहा। उनमें ज्यादातर लोग WCOTP में शामिल हुए और इस नये एकत्रिकरण का नाम WCOTP के स्थान पर उन्होंने EI (Educational International) किया। AISTF अभी भी EI का निलंबित सदस्य है।

जागतिक संगठन से लगभग २० वर्ष का हमारा संबंध रहा। यह समय निश्चिय ही अनुभव संकलित करने के लिये पर्याप्त समय है। इन २० वर्षों का अनुभव अपने लिये अच्छा नहीं रहा, यही कहना पड़ेगा। इसमें दोषी कौन, जागतिक संगठन या AISTF के कार्यकर्ता? इस चर्चा में जाने का यह स्थान नहीं है। हमें यही सोचना है कि ABRSM और जागतिक संगठन के संबंध कैसे हों। मुझे इसमें कुछ प्रमुख बिन्दु विचारार्थ सबके सम्मुख रखने हैं- १. जागतिक संगठन से जुड़ने में हमें आपत्ती नहीं होनी चाहिये, बशर्ते देश हित, संगठन हित, निश्चित लक्ष्य प्राप्ति, इनको आधार बनाकर संगठन इसका निर्णय करे। २. पिछले बीस वर्षों का अनुभव (जागतिक संगठन से जुड़ने का) हम ''अभी जागतिक संगठनों से बचे'', ऐसा निष्कर्ष वाला है। क्योंकि जागतिक संगठनों के प्रकल्प लेने के कारण (funding projects) भारत के शिक्षक संगठनों में विघटन की प्रवृत्ति को बल मिला है। यह होना किसी के भी हित में नहीं। ३. जागतिक संगठन के funding projects लेने से कार्यकर्ताओं की आदतें बिगड़ती हुइ देखी गयी हैं। (अ) झूँठे हिसाब रखने को बढावा मिला है। (ब) जागतिक संगठन के पैसे से विदेश में जाने की लालसा, कार्यकर्ताओं में बढ़ी है और उसके कारण झगड़े भी हुए हैं। ४. funding के पैसे

लेकर काम करने की शैली के कारण, हम अपने देश के लिये कष्ट सहन कर काम करने की शैली को भूलने की प्रक्रिया अधिक गतिमान हुई है। अब प्रवास व्यय मिलेगा तो मैं बैठक में आऊंगा, यह भावना कार्यकर्ताओं में सहज हो रही है। जब कि संगठन के पास अपना पैसा नहीं है। संगठन अपनी अर्थव्यवस्था सुदृढ करके कार्यकर्ताओं को सहुलियत पहुँचाये, इसमें किसी को आपत्ती नहीं। ५. funding projects उससे प्राप्त धन और उससे प्राप्त दो, चार लोगों को मिलने वाला आराम, उसके लिये प्रोजेक्ट मान्य करा लेना, उसका धन क्रमशः प्राप्त करना, उसके हिसाब किताब पूरे करना (झूठे भी), विभाग (रा.स्व.संघ) इसमें संगठन के कार्यकर्ता व्यग्र होने के कारण, देशांतर्गत अपने दायित्व को निभाने में दुर्लक्ष हुआ दिखाई देता है। जिस तीव्रता से देश भक्ति की अंतर्ज्वाला के कारण कार्यकर्ता त्याग और समर्पण को तैयार होता है– होना चाहिये, वह उससे वंचित होता है।

इस संबंध में और भी एक बात ध्यान में आती है। funding projects के विषय जागतिक संगठन (funding करने वाला देश) प्रोजेक्टस् का सुझाव देते हैं। अभी तक ये नहीं हो पाया की, विषय हम दें, जो हमारे लिये देश में आवश्यक लगता है उस विषय का हम सुझाव दें और जागतिक संगठन उसको funding करे, यह नहीं हुआ।

ABRSM की मूलतः व्यावसायिक संगठन की संकल्पना भारतीय तत्वज्ञान से प्रभावित पद्धति है। जब कि जागतिक संगठन और उनसे संलग्न संगठन इनकी रचना केवल employer, employee relation पर आधारित है। हमारी व्यावसायिक संगठन की संकल्पना में राष्ट्रीय भावना, संगठन की पारिवारिक पद्धति, उसके कारण परिवार के प्रति त्याग, सेवा, समर्पण, इनका अधिष्ठान महत्वपूर्ण है। इनको अधिष्ठान बनाकर व्यवसाय से संबंधित लोग (यहाँ शिक्षक) इनके अधिकारों का विचार हम मानते हैं। जागतिक संगठन से जुड़ने का आग्रह हम रखें, ऐसी कोई वजह भी झटसे सामने नहीं आती। अतः उसकी कोई भी जल्दी नहीं है। हम देश का सही अर्थ में एक ताकतवर संगठन बनें, यही हमारा पहला अग्रक्रम होना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से मजबूत संगठन बनने के पहिले, उनकी रियायत पर हम

सदस्य न बनें। योग्य स्थिति आने पर उसका विचार उस समय के कार्यकर्ता करें।

हमारे संगठन की आय का कितना प्रतिशत व्यय हम इस पर करें, यह एक सोचने की बात है। एक समय AISTF अपनी वार्षिक आय का ८० प्रतिशत जागतिक संगठन को देता था और यह शुल्क भी रियायत शुल्क के रूप में हमसे लिया था। वास्तविक शुल्क देने की हमारी क्षमता तब भी नहीं थी, अब भी नहीं है।

आज दुनिया के सभी प्रमुख देशों में अपने संपर्क विश्व हिन्दू परिषद, विश्व, इनके द्वारा है। इन देशों में उनसे संपर्क करके, वहाँ के अपने से संबंधित लोगों का एक गुट तैयार करना और जहाँ हमारी स्थिति कुछ बेहतर है वहाँ अपनी संकल्पना के अनुसार, शिक्षक संगठन चलाने का प्रयास हम कर सकते हैं। यह थोड़ी दूर की बात है।

एक बात ध्यान में आयी है कि यदि हम विधिवत जागतिक संगठन के नियमानुसार शुल्क देने के आर्थिक दृष्टि में सक्षम होते हैं तो हमें उनके नियमानुसार जितना प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सकता है, वह जागतिक संगठन हम अपने प्रभाव में कर सकते हैं। लेकिन यह बात तब की है जब हम आर्थिक दृष्टि से उतने संपन्न होंगे।

आज हमारे सामने यह विषय नहीं हैं, आज वो आर्थिक क्षमता भी नहीं है। हम अपने देश में राष्ट्रवाद के संघर्ष में उलझे हुए हैं। यह अपने अस्तित्व की लड़ाई है। हमें इस पर ही हमारा लक्ष्य केन्द्रित करना आवश्यक है। जागतिक संगठन से कोई लक्षणीय लाभ मिलने की आज की स्थिति नहीं है। नाममात्र के लिये उनकी दया पर रियायत शुल्क देकर, उनसे जुड़ने से हमारी राष्ट्रीय समस्या को कोई फायदा नहीं है। इस विषय में हमारे कार्यकर्ताओं की समझदारी बढानी होगी और यथा समय आवश्यक निर्णय करना होगा। ❑

शक्ति प्रदर्शन

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की आज की स्थिति, समाज को अथवा शासन को दखल लेने योग्य समझे, ऐसी नहीं है। हम हैं, इतनी ही भावना उनके मन में है। देश के शिक्षा क्षेत्र में हम कुछ करेंगे तो शिक्षा क्षेत्र में हडकंप मचेगा, ऐसा किसी को लगता नहीं है। समाज और शासन की मानसिकता चमत्कार देखने के बाद नमस्कार करने वाली है। यह ध्यान में रखकर हमें अपने को चमत्कार करने की स्थिति में लाने के लिए पूरी ताकत लगाकर प्रयास करने चाहिए और फिर चमत्कार दिखाने की बात सोचनी चाहिए। शक्ति प्रदर्शन, यह चमत्कार करने का एक मार्ग है।

भारत में लगभग ७०० जिले और ६००० तहसील हैं। तहसील के समकक्ष गांव भी देश में संभवत: उतने ही हैं। यदि हमारा कोई भी कार्यक्रम हमारे निर्देश के अनुसार इन ११,००० स्थानों पर क्रियान्वित होता है तो वह भी शक्ति प्रदर्शन हो सकता है। यदि देश में कहीं भी, मानो दिल्ली में एक-डेढ़ लाख शिक्षकों की रैली हम करते हैं तो वह भी शक्ति प्रदर्शन है। यदि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के निर्देश पर एक लाख शिक्षक अपने-अपने स्थानों पर ३-४ लाख आर्थिक दुर्बल अथवा पिछड़े विद्यार्थियों का अभिभावकत्व स्वीकार करते हैं तो यह भी शक्ति प्रदर्शन है। यदि शैक्षिक महासंघ के कार्यकर्ता देशभर में किसी समाज हित के उपक्रम में ८-१० हजार स्थानों पर शामिल होते हैं, वह भी शक्ति प्रदर्शन ही है। शक्ति प्रदर्शन के और भी कई मार्ग सोचे जा सकते हैं लेकिन सभी में एक बात समान आवश्यक और महत्वपूर्ण है, वह कार्यक्रम-उपक्रम कितने हजार/लाख की संख्या में किये जाते हैं।

यदि हम, जिसमें पैसा बहुत बड़ी मात्रा में खर्च करना पड़े, ऐसे मार्गों को छोड़ दें तो उसे अधिक सफलता मिलने की अभी की स्थिति है। दिल्ली में एक-डेढ़ लाख शिक्षकों का आना खर्चे की दृष्टि से बहुत खर्चीला होगा। किसी समय उसे

भी करना पड़ेगा। लेकिन आज वह अपनी स्थिति नहीं है। दस लाख शिक्षकों के हस्ताक्षर यह भी एक रास्ता हो सकता है। १०-११ हजार स्थानों से केन्द्र में तार (टेलीग्राम) भेजना, यह भी एक रास्ता हो सकता है। किसी एक दिन या एक ही सप्ताह में किसी दिन स्थानीय स्तर पर छोटी-मोटी सभाएं करना, यह भी कम खर्चीला शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम हो सकता है।

उपरोक्त विवरण शक्ति प्रदर्शन की संकल्पना स्पष्ट करने के लिए किया है। इसके अलावा अन्य अनेक सुझाव आप भी दे सकेंगे। लेकिन जैसे कि ऊपर कहा है कि यह चमत्कार करने का कार्यक्रम पर्याप्त पूर्व तैयारी करने के बाद ही सम्भव है। इसीलिए सबसे पहले संगठन विस्तार की बात कही है। ऐसे कार्यक्रम के पहले भी पूर्व तैयारी के लिए कुछ कार्यक्रम करने पड़ेंगे। उसका भी विचार हमको करना आवश्यक है। एक बात महत्वपूर्ण है, शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम जल्दी करना हम चाहेंगे लेकिन जल्दी का मतलब आधी-अधूरी तैयारी के साथ दौड़ पड़ना नहीं है। इस विषय का विचार करते समय जल्दी करनी है, जल्दबाजी नहीं करनी है। ❑

'अनेकता में एकता' का हमारा वैशिष्ठ, हमारे सामाजिक जीवन के भौतिक एवं आध्यात्मिक, सभी क्षेत्रों में व्यक्त हुआ है। यह उस एक दिव्य दीपक के समान है, जो चारों ओर विविध रंगों के शीशों से ढका हुआ हो। उसके भीतर का प्रकाश, दर्शक के दृष्टिकोण के अनुसार भाँति-भाँति के वर्णों एवं छायाओं में प्रकट होता है।

-श्रीगुरुजी

प्रकाशन

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का कार्य २० राज्यों में शुरू हुआ है। उनमें से १० राज्य ऐसे हैं जो अपनी पाक्षिक या मासिक पत्रिका प्रकाशित करते हैं। अपना आग्रह रहा है कि राज्य में यह पत्रिका राज्य की प्रादेशिक भाषाओं में प्रकाशित हो। केरल, आन्ध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा बंगाल राज्यों में वहाँ की राज्यभाषा और मातृभाषा में उनकी मासिक पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। बाकी राज्यों में जिसमें राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, झारखंड हैं, हिन्दी भाषा में जो, उनकी राज्यभाषा और मातृभाषा भी है, पाक्षिक या मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है। इन सभी पत्रिकाओं में होने वाला प्रकाशन और सशक्त बनाना है। स्थूल रुप से कुल प्रतियाँ सबकी मिलाकर २५००० तक छपती हैं। जबकि इन राज्यों में शिक्षकों की संख्या ५० लाख है और विद्यालयों की संख्या ५ लाख तक है। इसका मतलब यह है कि हमारा प्रकाशन अत्यल्प से भी कम है।

हमारे संघर्ष का क्षेत्र बहुत व्यापक है। अभिभावक करोड़ों की संख्या में हैं। शिक्षक और विद्यालय लाखों की संख्या में हैं। ऐसी स्थिती में २५००० प्रतियों का प्रकाशन केवल प्रतिकात्मक है ऐसा कहना पड़ेगा। सभी शिक्षकों तक ही नहीं अभिभावकों तक याने समाज तक हमें पहुँचने की आवश्यकता है। एक तरीका प्रत्यक्ष कार्यकर्ता द्वारा सम्पर्क करना है लेकिन इसके लिए भी कार्यकर्ताओं की संख्या उतनी मात्रा में सक्रिय करना आवश्यक है। आज देशभर में लगभग २००० कार्यकर्ता थोड़े से सक्रिय हैं। यह संख्या हम बढाएंगे लेकिन तत्काल यह संख्या तिगुनी करना चाहिए, पर यह संख्या भी अत्यल्प से कम है।

एक तरीका और है, हम छोटी-छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित करें, उनको कुछ बेचें, कुछ वितरित करें। यह प्रकाशन भी हमें लाखों की संख्या में करना पड़ेगा और तब कहीं हम आवश्यकता के एक-आध प्रतिशत के आस-पास पहुँच सकेंगे। आज की स्थिति में इसी को हम अपना लक्ष्य बनाकर प्रयत्नशील बनें।

छद्म सेक्युलरिस्ट लोगों का गलत प्रचार, वास्तविक स्थिति के संबंध में समाज का अज्ञान, अंग्रेज और कम्युनिस्ट द्वारा जानबूझकर भ्रामक प्रचार, इनको नष्ट करने

के लिए हमें प्रयास करने हैं। देश में जो लिखने पढने वाला समाज है, उनको ऐसे प्रकाशन के द्वारा जानकारी देना, गलत के स्थान पर सही क्या है, यह बताना और सोचने का सही दृष्टिकोण देना, यह लक्ष्य हमें रखना होगा। इसके लिए हमको प्रकाशन के विषय चुनना, उस पर ठीक ढंग से लिख सकने वाले बंधुओं को ढूंढना, उनसे लिखवा लेना और छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित करना, यह काम हमें बड़े ही प्रयास के साथ पूरी शक्ति लगाकर करने की आवश्यकता है।

अत: पहले हमको यह दो काम करने पड़ेंगे, विषय चुनना और लिखने वाले बंधुओं को ढूंढना।

प्रकाशन के लिए धन की आवश्यकता रहेगी। यह धन जुटाने का काम भी साथ-साथ करने की आवश्यकता रहेगी। ❑

हम एक ही समाज की संतान हैं और हमें अपने सुख दु:ख परस्पर बाँटने हैं। इस एकात्मभाव का अभाव ही हमारी दुर्गति का मूल कारण है। समाज के प्रति हमारा प्रेम और समर्पण ठोस रूप में प्रकट होना चाहिए। उदाहरणार्थ-हमारे समाज में अनेक लोगों को दैनिक भोजन के बिना रहना पड़ता है, क्या हम उनके प्रति संवेदनशील हैं? क्या हमारे मन में उनके लिए कुछ करने की इच्छा जागृत होती है? प्राचीनकाल में हमारे यहाँ 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' होता था, जहाँ सर्वप्रथम निर्धन व भूखों को भोजन कराया जाता था, शेष सब बाद में खाते थे। आज भी हम समाज के भूखे लोगों के लिए मुट्ठीभर अन्न निकालकर अपना भोजन कर सकते हैं और करना भी चाहिए। यही वास्तविक 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' होगा।

-श्रीगुरुजी

विद्वत परिषद

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने शिक्षा की समस्याओं के बारे में कार्य करने का निश्चय किया है। शिक्षा की समस्याओं को हल करने का एक तरीका है। एक ओर समस्या को सामने रखकर, उस समस्या के संबंध में आवश्यक जानकारी इकट्ठा करना। उस जानकारी को आधार बनाकर उस विषय पर संगठन के स्वीकृत सिद्धान्त को सामने रखकर, उस पर विचार विनिमय करना। एक प्राथमिक मसौदा बनाना, उसको विचारार्थ प्रस्तुत करना, उस विषय पर चर्चासत्र आयोजित करना और प्राप्त सूचनाओं पर विचार करके अंतिम मसौदा तैयार करना और फिर उस विषय को शासन और समाज के सम्मुख एक माँग के रूप में रखना, उसके लिए अनुप्रयास करना, यह स्थूल रुप से वह तरीका है। लेकिन इसके अलावा भी कुछ आवश्यकताएं रहती हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण बात यह है कि समाज में शिक्षाविद् माने जाने वाले लोगों का समर्थन प्राप्त करना। शिक्षाविदों की अनुकूल प्रतिक्रियाएँ समाज और शासन को प्रभावित करती है। इसलिए ऐसे शिक्षाविदों का एक मंच गठन करना आवश्यक है।

अपने समाज में शिक्षाविदों के कुछ प्रकार हैं। एक प्रकार है, जो लगातार और प्रदीर्घ समय तक शिक्षा के विषय में कुछ कहते रहते हैं, लोग उन्हें शिक्षाविद् मानने लगते हैं। दूसरा प्रकार है, देश के बाहर की शिक्षा विषय की किताबें पढकर उनका अनुवाद प्रकाशित करने वाले और उसके आधार पर समाज को लेख अथवा किताब लिखने वाले, समाज इन्हें भी शिक्षाविद् मानता है। तीसरा प्रकार है, जो अपनी संस्कृति को, देश की आवश्यकताओं को ठीक प्रकार समझकर विचार विनिमय और चिंतन के द्वारा देश के हित में अपने विचारों को प्रकट करने वाले और सम्भवत: इन विचारों को क्रियान्वित करने वाले, ऐसे प्रयोग करते हैं ऐसे लोगों को भी शिक्षाविद् माना जाता है। हमें तीनों प्रकार के शिक्षाविदों से सम्पर्क करके उन्हें अपने साथ जोड़ना आवश्यक है। इतना ही नहीं अपने में से जो चिंतनशील, कार्यक्षेत्र में अनुभव के आधार पर जिनकी दृष्टि व्यापक हुई है ऐसे अपने कार्यकर्ताओं को

भी हमें समाज में शिक्षाविद् के रूप में सामने लाना चाहिए। शिक्षक संगठन, जो विषय शिक्षकों व शिक्षा का है वह समाज व शासन के सम्मुख रखेगा। उसको अनेक समाजमान्य व शासनमान्य व्यक्तियों का समर्थन उपयोगी होता है।

एक बात है, इन शिक्षाविदों के पास जाकर उनसे सम्पर्क करना पड़ता है। पत्राचार, फोन से सम्पर्क, उनके घर जाकर सम्पर्क, उन्हें बीच-बीच में किसी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित करना, इस तरीके से उनको जोड़ा जा सकता है।

अपेक्षा ऐसी है, प्रत्येक राज्य में सामान्यत: जिलों की संख्या के समकक्ष संख्या में शिक्षाविदों को सम्पर्क कर जोड़ना और उस समूह को विद्वत परिषद नाम से जानना, यह हमको करना चाहिए। ऐसे राज्य-राज्य में सम्पर्क में आए हुए शिक्षाविदों में से कुछ मुख्य शिक्षाविदों को लेकर, एक अखिल भारतीय विद्वत परिषद हम बना सकेंगे। २००६ दिसम्बर के पहले हम प्रयास करें कि अपने राज्य में इस प्रकार की विद्वत परिषद का गठन हो। ❑

यदि एक बार सच्ची सेवा-भावना हमारे जीवन में प्रवेश कर जाती है। तब हम यह अनुभव करने लगते हैं कि हमारी व्यक्तिगत और पारिवारिक सम्पत्ति, वह कितनी ही अधिक क्यों न हो, वास्तव में हमारी नहीं है। ये तो समाज-देवता की पूजा के लिए उपकरण मात्र है। तब हमारा सम्पूर्ण जीवन समाज की सेवा के लिए एक उपहार हो जाएगा।

-श्रीगुरुजी

प्रकल्प, केन्द्र - राज्य के

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का शिक्षा के क्षेत्र में अपना स्थान बनाना, यह हमने अपना संगठनात्मक लक्ष्य माना है। शैक्षिक महासंघ की स्थापना में शिक्षक संगठन को शिक्षा के विषय में काम करना चाहिए, यह एक आयाम था ही। इससे किसी का दोमत नहीं है लेकिन इस पर किसी का जोर भी नहीं है। शैक्षिक महासंघ की पहचान जो हम बनाना चाहते हैं उसमें शिक्षा पर विचार और मार्गदर्शन यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन वह हमारा निश्चित, नियमित व विकसित अंग नहीं बना है। बहुत जल्दी उसे ऐसा बनाना चाहिए। उसके लिए यह एक सुझाव है कि वर्ष में एक शिक्षा विषयक प्रकल्प राज्य के द्वारा क्रियान्वित हो और केन्द्रीय संगठन के द्वारा भी प्रतिवर्ष एक प्रकल्प राज्य की सहायता से पूरा किया जाए। हम २-३ वर्ष यह उपक्रम लगातार करते हैं तो शैक्षिक महासंघ की नयी पहचान सहज रीति से बनेगी।

जब शैक्षिक प्रकल्प की बात हम करते हैं तो उसके पीछे की संकल्पना इस प्रकार है। राज्य की कुछ अपनी समस्याएं होती हैं, जिसकी व्याप्ति राज्यस्तर की होती है। शासन उस पर कुछ निर्णय करता है। वह भी निर्णय करते समय स्वाभाविक रीति से राज्य चलाना है, उस दायरे में उनकी सोच रहती है। इसमें सत्ताधिष्ठित राजनीतिक दल की सोच उसमें प्रभावी रहती है। यह विचार राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक, इससे बहुत बार सोच बहुत अंतर रखने वाली होती है। राज्य का शिक्षा के संबंध में कोई भी निर्णय राष्ट्र के हित में है अथवा नहीं, उस निर्णय के परिणाम तात्कालिक और दीर्घकालिक क्या होंगे, यह सोचना आवश्यक हो जाता है। कई बार राजनीतिक अथवा किसी दबाव में निर्णय होते हैं। उससे निर्मित समस्या अभ्यास का विषय बनती है। ऐसी किसी समस्या को प्रत्येक राज्य चुने और उस पर काम करें, यह अपना एक नियमित वार्षिक कार्यक्रम होना चाहिए।

शैक्षिक समस्या पर काम करने की स्थूल कल्पना इस प्रकार है। समस्या को सामने रखकर सर्वप्रथम उस विषय से संबंधित आवश्यक जानकारी प्राप्त करना, उस जानकारी को सम्मुख रखकर राष्ट्रहित के परिप्रेक्ष्य में उस पर विचार करना और अपना मत उस समस्या के बारे में तैयार करना, यह मत एक प्रबंध के रूप में समाज और शासन के सम्मुख रखना, उस विषय को आवश्यकता के अनुसार एक से अधिक स्थानों पर चर्चासत्र या विचारगोष्ठी के माध्यम से समाज की प्रतिक्रिया जानने के लिए रखना, प्राप्त सुझाव लेकर उस पर फिर से अपने विचारों के अनुसार अंतिम रूप देना, यह एक शास्त्रीय प्रक्रिया है। उस विषय पर शैक्षिक महासंघ का सुविचारित मत होगा, जो शासन और समाज के लिए दीर्घकाल तक मार्गदर्शक होगा।

यह सब करने का काम, उसके लिए गठित एक छोटे से समूह द्वारा किया जा सकता है। ऐसे समूह की निर्मिति उसके लिए पर्याप्त है। आवश्यकता पड़ेगी तब जानकारी प्राप्त करने में संगठन की क्वचित मदद लेनी पड़ेगी। सर्वसामान्य कार्यकर्ता को उसमें एक कच्चा मसौदा तैयार होने पर प्रतिक्रियाएं प्राप्त करना इतना ही काम रहेगा। कुछ विषय अखिल भारतीय स्तर के भी रहते हैं। ऐसे विषय केन्द्रीय स्तर पर चुने जाएं और उपरोक्त पद्धति से वहां भी क्रियान्वयन हो। इसमें समय का बंधन कम और पक्की जानकारी के आधार पर चिंतन इनका महत्व अधिक है। अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने तीन प्रकल्पों पर काम शुरू किया है। **प्रथम**- अंग्रेजी की शिक्षा और अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा- उसके परिणाम व समाधान। **दूसरा**-देश में विद्यालय-महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा की दु:स्थिति और उसके लिये क्या किया जाये। तथा **तीसरा**-शिक्षा में विज्ञान और अध्यात्मिक शिक्षा, दोनों साथ चलें। ❑

विवेक और वैराग्य के बिना शास्त्र पढ़ना व्यर्थ है। विवेक-वैराग्य के बिना धर्मलाभ नहीं होता है । सत् और असत् का विचार करके सद्वस्तु ग्रहण करना, यही 'विवेक' है। **-श्रीगुरुजी**

सेवा एवं सामाजिक सरोकार के कार्य

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ यह देशव्यापी **शिक्षक संगठन, पारंपरिक शिक्षक संगठन** नहीं है, यह हम सभी जानते हैं। भारतीय जीवनदर्शन-संस्कृति-जीवन मूल्य इनके अनुरूप व युगानुकूल संगठन, यह हमारी शिक्षक संगठन की संकल्पना है। शिक्षक संगठन को राष्ट्रभावना का अधिष्ठान और समाज से अपने रिश्ते का ध्यान रखकर शिक्षक संगठन का व्यवहार हम करना चाहते हैं। शिक्षक समाज का अंग है। हम समाज के कारण हैं और समाज को हमारा उपयोग है यह परस्परावलंबन महत्त्वपूर्ण हैं। यदि हाथ अथवा पैर ने कहा कि इस शरीर से मेरा कोई संबंध नहीं है तो वह अवयव स्वयं नष्ट होगा और शरीर का भी नुकसान होगा। हम शिक्षकों को यह बात ध्यान में रखकर ही विचार करना चाहिए।

देश स्वतंत्र होने से आज तक देश का शिक्षकवर्ग समाज से मांग ही रहा है और प्राप्त ही कर रहा है। अब सोचने का समय आ गया है कि हम समाज को क्या दे रहे हैं? समाज ने इस संबन्ध में शिक्षकों के प्रति नाराजगी प्रकट की है। अपवाद जरूर है, लेकिन समाज की यह धारणा बनी है कि शिक्षक अपने दायित्व को निभा नहीं रहा है और हम इस आक्षेप का ठोस इन्कार करने की स्थिति में नहीं हैं।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की स्थापना करते समय, सद्यस्थिती में शिक्षक और समाज में पैदा हुई खाई को मिटाने का आयाम जोड़ा है। यह खाई पाटने का मतलब है हम समाज का एक उपयोगी अंग बनें। तभी तो वे हमको अपना मानेंगे। बुलगेरिया में शासन और समाज में शिक्षकों के प्रति जो आस्था देखी, उसे देखकर मैं अचंभित हुआ। उन्हें उसकी वजह पूछी। उन्होंने कहा यह शिक्षक संघ पिछले ८० साल से समाज के सुख-दु:ख में कंधे से कंधा मिलाकर साथ देता आया है। यह शिक्षक संघ हमें हमारा अपना लगता है। क्या आज अपने देश में शिक्षक संघों के बारे में यह सुनने की सम्भावना हमको लगती है?

हमें शिक्षक के नाते समाज में उपयुक्त बनने के लिए शिक्षा क्षेत्र के दायरे में करने योग्य बहुत बातें हैं। दैनंदिन जीवन में करने योग्य बातें बहुत हैं और प्रासंगिक बातें भी हैं। प.पू. श्री गुरुजी से एक बार चर्चा हो रही थी। ट्यूशन की बात चल पड़ी। ट्यूशन एक धंधा बन गया है, शिक्षक उसके पीछे पड़े हैं आदि जिक्र बातों में आया था। प.पू.श्री गुरुजी ने उस समय कहा था कि बाकि बातें अभी रहने दो। तुम इतना तो कर सकोगे कि तुम ३-४ छात्रों की ट्यूशन करते हो तो एक गरीब छात्र को, समाज ऋण को ध्यान में रखकर नि:शुल्क पढाइये। इससे भी उसमें कर्तव्यबोध जागृत रहेगा। मन के सामने एक चित्र आता है कि सचमुच ट्यूशन करने वाला प्रत्येक शिक्षक, इस प्रकार एक पिछड़े हुए छात्र को सचमुच नि:शुल्क पढाता है तो समाज के मन में शिक्षक के प्रति जो भावना बनेगी, क्या वह शिक्षक और समाज को जोड़ने वाली नहीं होगी ? यदि आम शिक्षक २-३ विद्यार्थियों का, जिन्हें उनके घर में कोई मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हो सकता है, उनके मार्गदर्शन के लिए अभिभावक बनता है तो उसके द्वारा समाज के हित में होने वाली अल्प सेवा भी शिक्षक को समाज में श्रेष्ठता दिलाने वाली बात समाज की नजर में होगी।

शिक्षक, शिक्षा के क्षेत्र में समाज सेवा की ऐसी कृति करें। जिसको जितना सम्भव है वह करें, यह आग्रह शिक्षक संगठन को करना चाहिए। १८-२० ऐसी सेवा की कृतियाँ, शिक्षक संगठन शिक्षकों के सम्मुख रखे। स्थानीय परिस्थिति व शिक्षक की रूचि ध्यान में रखकर शिक्षक उनमें से एक कृति करे, ऐसा आग्रह संगठन को करना चाहिए। ऐसी सेवा की कृति करने वाले शिक्षकों का सम्मान, संगठन को करना चाहिए। उनको संगठन के क्रियावान अथवा सक्रिय सदस्य मानना चाहिए।

गुजरात के स्व.श्री नगीनभाई पटेल ने शिक्षक संगठन के नाते समाज की सेवा करने का उदाहरण अपनी कृति से प्रस्थापित किया है। गुजरात में अकाल के समय शिक्षक संगठन के नाते प्रत्येक शिक्षक से कुछ दिनों का वेतन समाज की सहायता करने हेतु उन्होंने इकट्ठा किया और शिक्षक संगठन के द्वारा राहत केन्द्र चलाए। समाज के सुख-दु:ख में समाज का साथ शिक्षक संगठन के नाते देने का यह उदाहरण है। महाराष्ट्र में किल्लारी में भूकम्प होने के समय महाराष्ट्र राज्य शिक्षक

परिषद ने मृत शिक्षकों के अनाथ लड़कियों के विवाह व्ययसहित सम्पन्न कराये थे। हाल ही में, ५-६ महिने यह जो अपवाद के रूप में हुआ है वह सर्वत्र हो। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की वह पहचान बने, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

अपने शिक्षक संगठन में प्रत्येक सदस्य कुछ न कुछ सेवाकार्य करने वाले हों। ऐसे शिक्षक संगठन के प्रति समाज का अपनेपन का भाव स्वाभाविक रूप से ही रहेगा।

सामाजिक सरोकार के कार्य

आपदा-विपदा के समय सभी जन एक साथ मिलकर सहायता कार्यों में जुट जाते हैं। इसके अतिरिक्त भी समाज में अनेकानेक कार्य सरकारी सहायता के बगैर भी किये जाने चाहिए क्योंकि व्यवस्था की भी अपनी मर्यादा है साथ ही साथ समाज की आवश्यकताओं के अनुरुप चलने वाली संस्थाएं भी इस प्रकार के कार्य कर अपने कर्त्तव्य का पालन करे।

अपने शिक्षक संगठन, शैक्षिक गतिविधियों में वर्षभर कार्यरत रहते हैं साथ ही व्यावसायिक संगठन के नाते शिक्षकों की समस्याओं को लेकर यथा प्रयास समाधान कराते हैं। ऐसे में समाजकार्यों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने में पीछे रहे हैं आज इसे समझकर सामाजिक सरोकार के कार्य में हम जुटे हैं अन्यथा अपनी पहिचान 'शिक्षक खुदगर्ज हो गया है ?' 'बड़ी राशि वेतन में प्राप्त करता है?' जैसी बन जायेगी।

समाज, देश, राष्ट्रहित बिना क्या हमारी भी उन्नति, विकास, पहिचान संभव है? विचार करने पर ध्यान में आयेगा कि जो सामर्थ्य, बुद्धि, कौशल भगवान ने हमें दिया है उसका उपयोग करने की दिशा में हम अभी तक अग्रेसर नहीं हुए। समय की पुकार समझकर देश हितार्थ हम अपने समय समर्पण के साथ ही अनेक साथियों को सामाजिक सरोकार के कार्यों से जोड़ें।

अत्यल्प साधनों से किये जाने वाले कार्य अपनी प्राथमिकता में रहें। सुझावार्थ निम्न कार्य किये जा सकते हैं। यथा-

(1) **पर्यावरण**- सम्पूर्ण संसार पर्यावरण को लेकर चिन्तित है। असीमित साधनों का प्रयोग संकट का कारण बना है। ऐसे में निम्न कार्य किये जाने चाहिए।

(i) **वृक्षारोपण**- वर्षा ऋतु में प्रतिवर्ष अपने विद्यालय, सार्वजनिक स्थलों पर

समारोह पूर्वक वृक्षारोपण करें। विद्यालयीन बच्चों को वर्षभर संभाल एवं संरक्षण हेतु एक-एक वृक्ष नामित करें। वर्षभर हम भी ध्यान दें। समाज जागरण कर कौन-कौनसे पौधे पर्यावरण दूषित करते हैं यह भी बतायें।

(ii) **पॉलिथिन के उपयोग के विरूद्ध जन जागृति अभियान**- रैली, प्रभातफेरी, संकल्प, जुलुस, कर पत्रक वितरण कर जन जागरण करें। जन-जन के मन में यह बात पैठ हो कि जिस गाय की हम पूजा करते हैं वह पालिथिन खाकर मरती है। घर के बाहर बहने वाला गंदे पानी का नाला, सीवरेज आदि पालिथिन के कारण बंद हो गये है।

(2) **जल संरक्षण**- कहा जाता है कि यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो पानी (water) को लेकर होगा। **'बिन पानी सब सून'** आदि कहावतें प्रचिलित हैं ही। भवन निर्माण, वास्तु संरचना के प्रकार ने पानी का उपयोग बढ़ा दिया है। जीवन शैली में आये बदलाव ने इस संकट से मिलवाया है।

(i) **वर्षाजल का संग्रहण**- जन जागृति के विभिन्न प्रयोग कर अपने घर की छत पर बरसे जल को नाली के माध्यम से घर में बने टैंक में जल संग्रहण कर वर्षभर उसका उपयोग करें। पश्चिम राजस्थान में यह प्रथा आज भी प्रचलित है। घर के साथ खेतों में कुआ जैसा ऊँचा घाट बनाकर वर्षा के जल का संग्रहण करते हैं।

(ii) **जल उपभोग नियंत्रित हो**- भवन निर्माण के समय ध्यान रख हवादार वास्तु रचना करें। डिटर्जेन्ट साबुन, पाऊडर, शेम्पो से अधिक पानी की खपत होती है यानि सामान्य साबुन उपयोगकरने पर केवल 40 प्रतिशत पानी लगता है। जन जागरण पत्रक वितरण कर, विद्यालयों की प्रार्थना सभा में, ग्रामजनों की संगोष्ठी कर विषय प्रतिपादन कर, उनसे संकल्प करावें। घर के उपयोग किये पानी को संचित कर पेड़ पौधों में उपयोग करें।

(3) **साक्षरता के लिए प्रयास**- तरुण शिक्षक कार्यकर्ता ऐसी आवश्यकता वाले स्थानों पर केन्द्र चलायें। अक्षर ज्ञान कर हस्ताक्षर ही नहीं वह लिख-पढ़ सकें, विवेकपूर्ण व्यवहार कर सकें, ऐसी शिक्षा की व्यवस्था 'हम नहीं भला और कौन' कर सकेगा।

(4) **सेवा बस्ती के बच्चों के लिए कोचिंग सेन्टर**-ऐसे अभावग्रस्त बस्ती के बच्चों के लिए दो-तीन मास के लिए परीक्षापूर्व कोचिंग केन्द्र चलायें।

विशेष कक्षाएं भी यथा अंग्रेजी, गणित, विज्ञान तथा अन्य भाषाओं की चलायी जा सकती हैं।

(5) **स्वदेशी जागरण**- प्रतिवर्ष अभियान लेकर कर पत्रक, प्रार्थनासभा में उद्‌बोधन, संकल्प कराकर, विदेशी की होली जलाकर, स्वयं से शुरु कर परिवार, मोहल्ला, ग्राम में आग्रह बने। एक-एक वस्तु का त्याग कर (उपयोग बंद कर) बचनवद्ध करते जाना। कर पत्रक, विज्ञापन, रैली, प्रभात फेरी, पट्टीकाएं साथ ले जाकर जनता को जागृत करें।

(6) **स्वास्थ्य चेतना**-

(i) योग प्राणायाम शिविर (ii) आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक चिकित्सा
(iii) देशी जड़ी-बुटियों से चिकित्सा (iv) मौसमानुसार खान-पान का आग्रह।

(7) **महत्वपूर्ण स्मारक, धार्मिक स्थलों का संरक्षण/ रखरखाव**

अनेकानेक कार्य हम शैक्षिक वैशिष्ठ को बनाये रखकर करते हुए सामाजिक सरोकार में लग सकते हैं।

- ❍ इन सभी कार्यों में से कोई एक कार्य जिलाश: अपनी सुविधानुसार समय निर्धारित कर प्रतिवर्ष किये जाने से धीरे-धीरे समाज में मान्य होंगे।
- ❍ कई कार्य अन्यान्य संस्थाओं द्वारा पूर्व से ही किये जाते हैं जो आर्थिक भार बढाने वाले हैं। हम कम खर्च वाले वे ही कार्य हाथ में लें, जिसका समाज पर सीधा प्रभाव पड़े।
- ❍ समाज में शिक्षक के बारे में जो धारणा अभी तक बनी हुई है वह इन प्रयासों से सम्मान प्रदान करने वाली बनेगी।
- ❍ आइये ! हम सभी मिलकर ''सं गच्छध्वं सं वदध्वम् सं वो मनांसीजानताम्....'' मंत्र को सार्थक कर सामाजिक मन भावना वाला भारत बनायें। जयतु भारतम्!

❑

हमारे राष्ट्रीय रक्त में, एक प्रकार के भयानक रोग का बीज समा रहा है, और वह है प्रत्येक विषय को हँसकर उड़ा देना, गाम्भीर्य का अभाव-इस दोष का सम्पूर्ण रूप से त्याग करो।

-श्रीगुरुजी

सक्रिय सदस्यता

हम सभी जानते हैं संगठन बड़ा करने का आधार, कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि, सैद्धान्तिक पक्ष के संबंध में समझदारी में वृद्धि, कार्यकर्ता द्वारा कार्य करने के लिए दिए जाने वाले समय में वृद्धि, उनकी कार्यकुशलता में वृद्धि व आर्थिक मजबूती। इनके आधार पर संगठन अधिकाधिक बड़ा होता रहता है। आज जैसी हमारी स्थिति है उसमें कार्यकर्ताओं की संख्या अपेक्षा से कम है। हम अपनी सदस्य संख्या छ:-साढ़े छ: लाख है ऐसा मानते हैं। लेकिन पूरे देश में कार्यकर्ताओं की संख्या २००० लगभग है। इसमें वृद्धि किए बिना कार्य का विस्तार नहीं होगा। यह जो २००० भरोसे के कार्यकर्ता हैं, वह भी आमतौर पर सब मिलाकर रोजना एक-डेढ़ घंटा काम करने वाले हैं। जो लक्ष्य हमारे सामने हैं, उसकी दृष्टि से यह २००० कार्यकर्ता संख्या अपर्याप्त है और वह जो समय देते हैं, वह भी पर्याप्त नहीं हैं। भरोसे के कार्यकर्ताओं की संख्या में और उनके द्वारा दिये जाने वाले समय में तीन गुना वृद्धि करने से हम अभी के अपेक्षित लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे। इसे अंतिम लक्ष्य की दिशा में कार्य वृद्धि का पहला चरण हम मान सकते हैं।

इसको ध्यान में रखकर यह एक सुझाव विचारार्थ सामने आया है कि हमारी सदस्यता में एक नयी श्रेणी निर्माण करें। यह नयी श्रेणी सक्रिय सदस्यों की होगी। जो सदस्य नित्य ३ घंटे अथवा सप्ताह में आधा शनिवार व पूरा रविवार अथवा बड़ी छुट्टियों में कुल मिलाकर १५ दिन कार्य के लिए देंगे, ऐसे सदस्यों को हम सक्रिय सदस्य कहें और उनका संगठन में कुछ स्थान बनाएं। हमारा प्रयास यह है कि हम इनकी संख्या बढ़ाते रहें। इनकी वृद्धि यह सही अर्थ में संगठन की वृद्धि होगी। एक और भी सुझाव विचारार्थ सामने है जो इस प्रकार नियमित समय नहीं दे सकते, वे नियमित रूप से धन की सहायता संगठन को करें। प्रतिवर्ष अपने वेतन के प्रति १०० रुपये में से १० पैसे वह संगठन को दें। उन्हें भी हम सक्रिय सदस्य कहें। यह एक गंभीर प्रस्ताव है। हम सभी इस पर विचार करें। आज नहीं तो कल, हमें इसका अवलंबन करना आवश्यक होगा। ❑

आर्थिक सुदृढ़ता

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की आर्थिक स्थिति, कार्यवृद्धि के लिए उपयुक्त मानी जाए ऐसी नहीं है, यह हम सब जानते हैं। हमारा दैनंदिन काम चलाने के लिए, प्रतिवर्ष जो शुल्क के रूप में आता है वह अपर्याप्त है। संगठन शुरू करते समय हमने यही सोचा था कि पहले राज्य को आर्थिक दृष्टि से मजबूत होने दीजिए केन्द्र स्वाभाविक रीति से मजबूत होगा। यदि आज संविधान के अनुसार जितना शुल्क संलग्न संगठनों से आना चाहिए, वह सब आता है तो भी संगठन की वर्ष भर की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती। बढते संगठन को जो निधि आवश्यक है वह इसके अतिरिक्त है। इस पर विचार करते समय एक बात ध्यान में आती है कि संगठनानुसार जो वार्षिक शुल्क आज तय है वह बिल्कुल अत्यल्प अथवा न्यून है। जिन संगठनों का शुल्क सर्वाधिक है, वह केवल ५० रूपयों तक है। आज की स्थिति में ५०रूपये वार्षिक सदस्यता शुल्क कोई मायने नहीं रखता। लेकिन हमारे कार्यकर्ता इसमें छलांग लगाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं। हम जब ५० रूपये शुल्क की बात करते हैं तो उसको लेकर कठिनाई में पड़ने वाले संगठन भी बहुत हैं जो वेतन श्रेणी प्राप्त प्राथमिक शिक्षक हैं उन्हें वर्ष में ६०००० रू. प्राप्त होते हैं, वे यदि ५०/- वार्षिक शुल्क देते हैं तो वह अपने प्रति १००/- रूपये में से ०.८३ पैसे, यह राशि१०० रू. की आय के १ पैसे से भी कम है। वर्ष भर में संगठन को देते हैं। हर माह ५०००/- रू. यह उसका नोकरी में लगने के समय की प्राप्ति है और जिनका वेतन ८-१०-१५ हजार है वह इससे भी अधिक न्यूनतम हिस्सा संगठन को देते हैं। मुझे ऐसा लगता है इसमें हमको बदल करना अत्यंत आवश्यक है। इतना अल्प पैसा संगठन इकट्ठा करता है तो उससे भी कम या कहें तो बहुत कम, वह केन्द्र को देता है। इस स्थिति से हमको निश्चयपूर्वक बाहर निकलना होगा।

जब तक शिक्षक संगठन के माने शिक्षक हित संबंधों का रक्षण, इतनी ही संकल्पना थी और यह धारणा थी कि जिसको कठिनाई होगी वह हमारे पास चला

आएगा, तब तो कठिनाई थोड़ी थी। लेकिन जब हम ५० लाख शिक्षकों तक राष्ट्रवाद पहुँचाने के लक्ष्य को लेकर चलना चाहते हैं, जिसमें शिक्षक हमारे पास आने से ज्यादा महत्त्व हम शिक्षकों तक पहुँचे-सभी शिक्षकों तक पहुँचे, यह हमारा लक्ष्य हो जाता है, तो उसके लिए हमको शुल्क में पर्याप्त बदल करना, यही मार्गशेष रह जाता है।

अभी दुर्ग में सम्पन्न संगठन की साधारण सभा में राज्य संगठन के प्रत्येक सदस्य से वार्षिक १ रू., राज्य संगठन सदस्यता करते समय अलग से केन्द्र के लिये जमा करने के निर्णय को स्वीकृत किया है। इससे राज्य संगठनों को सुविधा होगी। राज्य संगठन इस स्वीकृत प्रस्ताव का क्रियान्वयन, प्रामाणिक रीति से व मेहनतपूर्वक करेंगे तो निश्चय ही राज्यसंगठन व केन्द्रीय संगठन दोनों लाभान्वित होंगे।

और भी एक सुझाव मन में आता है कि जिन शिक्षकों की आय २ या ३ स्रोतों से है, उन्हें हम आवाहन करें कि वर्ष में संगठन को १००० रूपये वार्षिक सहयोग के रूप में दें। कम से कम ५ वर्ष वह आर्थिक सहयोग करे और ऐसे शिक्षकों को संगठन में सम्मानित किया जाए। आधी रकम एक स्रोतवालों से हम स्वीकार करें, यह भी एक तरीका है इस पर हम विचार कर सकते हैं।

संगठन के लिए इसके अलावा भी धन प्राप्ति के कुछ मार्ग और हो सकते हैं। जैसे अन्य कुछ संगठनों ने धन प्राप्ति की है उसकी भी चर्चा हम कर सकेंगे। लेकिन एक बात पक्की है, राज्य और केन्द्र में अपनी आय बढाने का प्रयास हमें जितनी जल्दी हो सके, प्रारम्भ करना चाहिए। ❑

> मेरी समस्त भावी आशाएँ उन नवयुवकों में केन्द्रित हैं जो चरित्रवान हों, लोकसेवा के हेतु सर्वस्व त्यागी और आज्ञापालक हों, जो मेरे विचारों को क्रियान्वित करने के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सकें।
>
> **-श्रीगुरुजी**

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

पंजी. क्र. S/25125/1993 केन्द्रीय कार्यालय : शैक्षिक महासंघ सदन 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053 फोन-011-55384602

अध्यक्ष
के. नरहरि, चैतन्य,.1357, 7 मेन श्रीरामपुरम
बैंगलोर (कर्नाटक) 560021
फोन: (080)-23324503, 23325743
9880595357

महामंत्री
महेन्द्र कपूर, शैक्षिक महासंघ सदन,
606/13, कृष्णा गली 9, मौजपुर,
दिल्ली-110053 फोन:(011)55384602
9868711893, 9414040403

अतिरिक्त महामंत्री
अजित बिस्वास,
ई-3/16, पुरवासा हाउसिंग, 160 मानिकतला
मेन रोड, कोलकाता (प.बंगाल)-700054
फोन: (033)-23582280, 9339841937

संगठन मंत्री
मुकुन्द कुलकर्णी, 'हर्षद' 126,
सहकार नगर-1, पुणे-411009(महाराष्ट्र)
फोन:(020)24228068, 9422331446

उपाध्यक्ष

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल (राजस्थान) फोन: (0145)-2425602, 9414004450	वसंत काणे (महाराष्ट्र) फोन:(0712)2221689, 9422804430
चौथमल सनाढ्य (राजस्थान) फोन: (07438)-265533, 9351346355	श्रीमती संजीवनी रायकर (महाराष्ट्र) फोन:(022)24135158, 9820282482

मंत्री

प्रो. जे.पी. सिंघल (राजस्थान) फोन: (0141)-2503159, 9414068780	स्वपन समद्दर चौधरी (प. बंगाल) फोन:(033)23355083
बाबूराम शर्मा (दिल्ली) फोन:(0121)-2279243, 9313037174	श्रीमती हेमलता जैन (मध्य प्रदेश) फोन:(0755)4236941,9425676546

संयुक्त मंत्री

डॉ. नारायण मोहन्ती (उड़ीसा) फोन: (0671)-2625853, 9437056977	डॉ. विनोद बैनर्जी (उत्तर प्रदेश) फोन:(0565)2443244,9412726843
गोविन्द तिवारी (उत्तर प्रदेश) फोन:(05672)-234746, 9412407623	श्रीमती यशोदा दशोरा (राजस्थान) फोन:(02952)230068,9314479161

कोषाध्यक्ष
बजरंग प्रसाद मजेजी, (राजस्थान)
फोन: (0141)-2377799, मो.9828050102

आंतरिक अंकेक्षक
नारायण वैद्य (महाराष्ट्र)
फोन:(020)25531685,9423577750

दक्षिण क्षेत्र प्रमुख
पी. चन्द्रशेखरन, (केरल)
फोन: (0484)-2408424, 9447912758

मध्योत्तर क्षेत्र प्रमुख
ओमपाल सिंह (उत्तर प्रदेश)
फोन:(0522)2273591, 9415121329

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

राज्य स्तरीय सम्बद्ध संगठन सूची

१. आन्ध्र प्रदेश उपाध्याय संगम (**APUS**)।
२. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, बिहार।
३. छत्तीसगढ प्रदेश शिक्षक संघ।
४. दिल्ली अध्यापक परिषद (**DAP**)।
५. नेशनल डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट, दिल्ली (**NDTF**)।
६. गोवा शिक्षक परिषद ।
७. गोवा शिक्षक परिषद उच्च शिक्षा शिक्षक संघ ।
८. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, गुजरात।
९. हिमाचल शिक्षक महासंघ।
१०. झारखण्ड प्रदेश राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ।
११. कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ।
१२. कर्नाटक राज्य प्राथमिक शाला अध्यापक परिषद।
१३. नेशनल टीचर्स यूनियन (देशीय अध्यापक परिषद, केरल) **NTU**
१४. उन्नत विधाभ्यास अध्यापक संघ, केरल।
१५. जवाहर नवोदय विद्यालय स्टॉफ एसोसियेशन ।
१६. मध्यप्रदेश शिक्षक संघ।
१७. मध्यप्रदेश शासकीय महाविद्यालयीन शिक्षक संघ।
१८. महाराष्ट्र राज्य शिक्षक परिषद ।
१९. महाराष्ट्र राज्य मान्य खाजगी प्राथमिक शिक्षक महासंघ ।
२०. विद्यापीठ शिक्षक मंच, नागपुर (महाराष्ट्र)।
२१. राष्ट्रवादी शिक्षक परिषद, उड़ीसा।
२२. गवर्मेंट सैकण्डरी टीचर्स एसोसियेशन, पंजाब ।
२३. गवर्मेंट प्राइमरी टीचर्स एसोसियेशन, पंजाब।
२४. राजस्थान यूनिवर्सिटी एण्ड कॉलेज टीचर्स एसोसियेशन, 'राष्ट्रीय' **(RUCTA-'R')**।
२५. राजस्थान शिक्षक संघ 'राष्ट्रीय'।
२६. गवर्मेंट पॉलीटेक्निक महाविद्यालय टीचर्स एसोसियेशन, राजस्थान।
२७. तमिलनाडू एसीरीयार संघ।
२८. मदुराई कामराज यूनिवर्सिटी कॉलेज (टीचींग एण्ड नॉन टीचींग) एमप्लोयीज एसोसियेशन, तमिलनाडु। **(MUCEA)**।
२९. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, उत्तरांचल।
३०. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, उत्तर प्रदेश।
३१. उत्तरप्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ।
३२. बंगीय नव उन्मेष प्राथमिक शिक्षक संघ, प. बंगाल।
३३. बंगीय शिक्षक ओ शिक्षाकर्मी संघ, प. बंगाल।
३४. जातीयतावादी अध्यापक ओ गवेषक संघ, प. बंगाल।
३५. अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षक महासंघ **(AISTF)**